प्रथम परिच्छेद Chapter-1

1. प्रतीक नाटक की व्युत्पत्ति: विभिन्न आचार्यों एवं विद्वानों के मत

2. भारतीय एवं पाश्चात्य नाटकों के विकास क्रम में प्रतीक नाटक का स्थान

3. प्रतीक का धातुगत, कोशगत अर्थ तथा विभिन्न विद्वानों के मत

4. प्रतीक और प्रतीकात्मकता

5. नाट्य कृतियों की प्रतीक योजना

6. नाट्य कृतियों की प्रतीकात्मकता और उनका समायोजन

प्रतीक नाटक की व्युत्पत्ति; विभिन्न आचार्यों एवं विद्वानों के मत:-

शैली शिल्प और कथ्य में हुए सामाजिक एवं अन्योक्ति परक प्रयोगों के फलस्वरूप प्रतीक नाटक का जन्म हुआ। पश्चिम के प्रतीक वादी आन्दोलन का सीधा प्रभाव होने के कारण इस प्रकार के अनभिधीय शैली में लिखे गये नाटकों को प्रतीक नाटक के नाम से जाना जाने लगा। इसका प्रभाव न केवल नाट्य जगत पर ही पड़ा अपितु हिन्दी साहित्य की विविध विधायें, उपन्यास, कहानी, तथा कविता आदि के क्षेत्र भी अछूते न रहे। अन्य विधाओं की अपेक्षा समकालीन नाटक पश्चिम के सामाजिक प्रतीक नाटकों के अनुकरण पर लिखे जाने के कारण समस्यामूलक और संकेत परक अधिक हो गया। पश्चिम के सांकेतिक प्रतीक पद्धति की देखा देखी हिन्दी में भी इस प्रकार के नाटक लिखे जाने लगे/पूरे परम्परा के नाटकों का आरम्भ तो बहुत पहले प्राप्त होता है, परन्तु यथार्थवादी समस्याओं के चित्रण में सांकेतिक प्रतीकों का प्रयोग प्रसादोत्तर युग से ही होता है। सेठ गोबिन्ददास का "प्रकाश" इस दिशा में पहला प्रयत्न है।"।। परन्तु यदि हम प्रतीकात्मक शैली के आधार पर इन समस्या मूलक नाटकों को प्रतीक नाटक के नाम से अभिहित करें तो स्वर्ग की झलक, चरवाहे, कैद उड़ान, छठा बेटा, ताजमहल का आंसू, तीन आँखों वाली मछली, रेशमी गांठ, रुपया तुम्हें खा गया, आदि नाटक हैं, और हिन्दी में यहीं से प्रतीक नाटकों की उत्पत्ति मानी जानी चाहिए। और इन प्रतीक नाटकों की व्युत्पत्ति का मूलभूत कारण हमारे व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों में होने वाले परिवर्तन से है।

परम्पराओं काविघटनसामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों में होने वाला परिवर्तन ही आज के प्रतीक नाटकों को पुरानी रचनात्मक परम्परा से काटकर अलग करदेता है, यहीकारण है, कि आज के नाटक और रंगमंच तथाप्राचीन काल के नाटक और रंगमंच मे जमीन आसमान का अन्तर है । मशीनी सभ्यता के विकास के कारण आज हमारे सामने प्राचीन परम्परा और संस्कार को लेकर अनेक विसंगतियों का पहाड़ खड़ा है । नये सिद्धान्तों के आधार पर नये नाटक की रचना आज की एक ज्वलन्त समस्या है। और उस समस्या का मूलभूत कारण हमारा समाज हीहै, आज रचना में जो यह परिवतन दिखायी दे रहा है, वहकेवल विषय की दृष्टि से भी है । और इन्हीं परिवतनों, बदलते दृष्टिकोणों, बदलते साहित्य और नाट्य समीक्षा के मानों, बदलती हुई मूल्य चेतना ने आज यह सिद्ध कर दिया कि "नाटक केवलमनोरंजन नही है, जीवन की जीवन्त व्याख्या है यहीकारण है, कि नई चेतना से अभिभूत होकररचनाकारों ने पाठ्यनाटकों की ओर अवमानना की। और नये नाटकों को जन्म दिया, जिसका शैली शिल्प सब कुछ प्रतीक है और जोप्रतीक नाटक के नाम से जाना जाता है। प्रतीक नाटक लेखन और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से बिल्कुल नया है, जीवन के अनिश्चय की छाप शिल्प के अनिश्चतरूप विधान पर स्पष्ट रूप से इन प्रतीक नाटकों में देखी जा सकतीहै यहभीकहा जा सकता है किआज केव्यक्ति की स्वचन्द प्रवृत्ति स्वच्छन्द प्रियता सभी प्रकार के बन्धनों से अपने आपकोमुक्त रखने की प्रवृत्ति वर्तनाओं सीमाओं, और नियन्त्रण केप्रति अपेक्षा का भाव सारी वर्जनाओं

---3

और सीमाओं को तोड़कर स्वैराचरण की अभिव्यक्ति प्रतीक नाटकों की पहचान है जिसका छाप स्पष्ट रूप से इन नाटकों में देखी जा सकती है। 2 रस गन्धर्व, रोशनी एक नदी है, अब्दुल्ला दीवाना, तेंदुआ कुत्ते, शंबूक की हत्या, आधे-अधूरे, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, बुलबुल सराय आदि नाटक इसी युग की देन है, जिनमें प्रतीकात्मकता, एब्सर्ड नाट्य शिल्प, संस्कृत नाटकों का प्राचीन और शास्त्रीय शिल्प तथा लोक नाट्यों की रूढ़ि और शिल्पगत लचीलेपन का प्रयोग एक साथ किया गया है, एब्सर्ड नाटक आधुनिक प्रतीक नाटकों का ही एक विकसित नाट्य शिल्प है, मुद्राराक्षस ने इसे यथार्थ को नये सिरे से तलाश करने वाली अभिव्यंजना पद्धति कहा है, उनके अनुसार "यह उस यथार्थ को उद्घाटित करती है जो जड़भाषा में दफन हो चुका था" 1. वस्तुत: एब्सर्ड नाटक प्रतीक नाटक का ही एक रूप है, जो वर्तमान जीवन के वास्तविक सन्दर्भों, विसंगतियों एवं संस्कारों को सशक्त तीक्ष्ण संकेतों एवं प्रतीकों के जरिये स्थापित करता है। डा॰ सावित्री स्वरूप ने प्रतीक नाटकों को रहस्यमय उद्देश्य की अभिव्यक्ति कहकर प्रतीक नाटक के लिए भाषा की शक्ति एवं प्रौढ़ता पर बल दिया है 3. डा॰ मोहन अवस्थी ने उन्हें प्रतीक नाटक कहा है " जिनके पात्र विशेष भाव या विचार पर्याय होते है 4 परन्तु रमेश गौतम की इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि इन प्रतीक नाटकों में नाटककार पात्रों एवं कथा द्वारा किसी का प्रतिनिधित्व करता है तथा पात्रों एवं प्रतीक कथा द्वारा नाटककार जिसका बोध कराता है वही प्रमुख है पात्र एवं प्रतीक कथा साधन मात्र ।

उपर्युक्त मन्तव्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रतीक नाटक प्रतीकों के माध्यम से सम्प्रेषित होने वाला नाट्य शिल्प है जिसकी व्युत्पन्ति - स्वातन्त्र्योत्तर काल में हुई, जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य केवल नयी रचना धार्मिता को जन्म देना ही नहीं था, अपितु प्रतीकों के माध्यम से नये शैली शिल्प वाले एक ऐसी क्रान्तिकारी साहित्य विधा का जन्म था जिसमें सम-सामयिक विसंगतियों बदलते सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों तथा आज के व्यक्ति की उलझी हुई संवेदनाओं का सम्प्रेषण आसानी से किया जा सके ।

भारतीय एवं पश्चात्य नाटकों के विकास क्रम में प्रतीक नाटक का स्थान:-

पश्चिम के प्रतीक वादी आन्दोलन के पूर्व यदि हमारे देश में लिखे जा रहे नाटकों पर विचार किया जाय तो शूद्रक का मृच्छकटिकम और विशाखदन्त का मुद्राराक्षस भी एक प्रतीक नाटक है । मृच्छकटिकम अर्थात मिट्टी की गाड़ी शीर्षक के पीछे रचनाकार एक ऐसे प्रतीक शीर्षक का चयन करता है जिसका अर्थ ततकालीन समाज, राजा, राजपरिवार, राजनीति सभी मिट्टी की गाड़ी की तरह है अर्थात मिट्टी की गाड़ी भ्रष्ट राजतन्त्र की प्रतीक है और सम्पूर्ण नाटक एक यथार्थवादी नाटक की दिशा की ओर चलता है, ठीक इसी प्रकार मुद्राराक्षस में पात्रों के मौन संकेतों और प्रतीकों का उपयोग किसी रहस्यमय राजनीतिक षडयन्त्र के लिए किया गया है । परन्तु इन नाटकों की कोई विशेष परम्परा नहीं रही है, और न ही इन नाटकों को प्रतीक नाटक आदि नामकरण से अभिहित किया गया । डा.

दशरथ ओझा ने संस्कृत के प्रबोध चन्द्रोदय नाटक को प्रतीक नाटक की श्रेणीमें रखा है, उनके अनुसार "प्रबोध चन्द्रोदय के अनुकरण पर हिन्दी में बहुत दिनों तक नाट्य सृजन होता रहा इसशैली की प्रथम विशेषता मानवब्र मन के सूक्ष्म तत्वों को पात्रों के रूप में प्रदर्शितकरके अध्यात्म के दुर्जेय रहस्यों को बोधगम्य बनाने के प्रयास में झलकती है। 6. वस्तुत: हिन्दी साहित्य में जो प्रतीक नाटकों की परम्परा चली वहसंस्कृत के प्रतीक नाटकों से शैली शिल्प और कथ्य के आधार पर काफी भिन्न थी "हिन्दी के इन आधुनिक प्रतीक नाटकों में संस्कृत के नाट्य रूपकों के समान दार्शनिक तथाधार्मिक विवेचन न होकर पाश्चात्य विचारधारा के अनुकूल मनोविज्ञानिक यथार्थवादी एवं सामाजिक समस्याओं का विवेचन अधिक है 7. इस प्रकार उपयुक्त विवेचनों से यह सिद्ध हो जाता है कि प्रतीक नाटक का प्रारम्भ पश्चिम के प्रतीक वादी आन्दोलन के बाद ही हुआ। और हमारे देश स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात ऐसे नाटक प्रतीक वादी शैली का आग्रह लेकर आयेऔर इन्हें प्रवृत्ति के अनुरूप नाट्यरूपक अन्यापदेशिक नाटक, अध्यवसित नाटक, भावात्मक नाटक, खुलानाटक, मुखौटानाटक, नुक्कडनाटक, विसंगत नाटक आदि नामों से अभिहित किया जानेलगा, ठीक इसी प्रकार पाश्चात्य नाटकों की परम्परा में हम शिल्प औरसरचना की दृष्टि से विचार करें तो वहाँ भी नाटक को ामरेकिल, मिस्टिकप्ले, सिम्बालिक ड्रामा, एलागारिकल ड्रामा एब्सर्ड आदि नामों से अभिहित किया गया।

पश्चिम में नाटक का विकास त्रासदी और कामदी की

दो विशिष्ट परम्पराओं में हुआ। पश्चिमी रंग परम्परा में ग्रीक ट्रेजेडी सर्वाधिक प्राचीन परम्परा है। शेक्सपियर के पूर्व दो प्रकार के रंगमंच प्रचलित थे खुला रंगमंच और एक हालवाला वैयक्तिक रंगमंच। पूर्ववर्ती रंगमंचों की तरह एलीजाबेथन थियेटर भी था जिसमें भूत, राक्षस आग, धुआँ आदि दिखाने के लिए यान्त्रिक उपकरणों की सहायता ली जाती अथवा उसे प्रतीकात्मक ढंग से दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था। अरस्तू से लेकर बीसवीं शताब्दी तक पाश्चात्य नाटक परम्परा शैली शिल्प और प्रस्तुतीकरण के आधार 6 भागों में विभाजित हो गयी इन्हें विभिन्न वादों के नाम से भी जाना जाता है। ये विभिन्न वाद हैं:-

1. क्लासीसिज्म (उदात्तवाद) अरस्तू द्वारा प्रतिपादित और होरेस द्वारा समर्थित इस नाट्यरचना शैली को क्लासीसिज्म के नाम से अभिहित किया गया।

2. रोमांटिसिज्म (स्वच्छन्दतावाद) शेक्सपियर द्वारा प्रवर्तित इस नवीन रचनाशैली को रोमांटिसिज्म के नाम से अभिहित किया गया। इस प्रकार की रचना शैली में शास्त्रीयता की उपेक्षा कर विभिन्न लोक तत्वों का स्वच्छन्दतापूर्वक उपयोग किया गया।

3. रियलिज्म (यथार्थवाद) स्वच्छन्दतावाद की रूमानी भावुकता और काल्पनिकता की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप यथार्थवाद का जन्म हुआ। जिसका सिद्धान्त डर्विन तथा मार्क्स के विचारों के आधार पर जीवन

---7

जगत और साहित्य के प्रति वास्तविकता अपनाना था । इसका विकास इब्सन के नेतृत्व में हुआ ।

4- नेचुरलिज्म (स्वाभाविकतावाद) यथार्थवाद की ही एक विशिष्ट शाखा के रूप में नेचुरलिज्म का विकास हुआ। यह जीवन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण का मुखापेक्षी है । इसके प्रवर्तक फ्रांसीसी कलाकार एमिलजोला है ।

5. एक्सप्रेसनिज्म (अभिव्यंजनावाद) यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप एक्सप्रेसनिज्म का जन्म हुआ जर्मनी के जार्ज कैसर तथा इटली के मैरीनेटी इसके प्रवर्तक हैं ।

6. सिम्बोलिज्म (प्रतीकवाद) इसका जन्म स्वाभाविकतावाद और यथार्थवाद के विरोध में हुआ इस वाद का प्रवर्तक मैटरलिंक है जिसे बेलजियम के शेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है । अनेक यथार्थवादी नाटककारों ने भी इस प्रकार की रचना धर्मिता को अपनाया इब्सन का नाटक " जब हम मुर्दे जाग पड़ते हैं" इसी कोटि का नाटक है ।

इस तरह प्रकार सन् 1950 तक पश्चिम में नई रचनाशैली प्रस्तुतीकरण की नई विधाओं, नये शिल्प और नये नये वादों का जन्म होता रहा । सन् 1950 के बाद जिस नये नाट्य आन्दोलन का जन्म हुआ उसे एब्सर्ड थियेटर, एब्सर्ड नाटक अर्थात विसंगत नाटक के नाम से जाना जाने लगा । एब्सर्ड नाटक का पहला पुरोधा नाटककार

सैमुएल बैकेट माना जाता है। उसके वेटिंग फार गोदो (1952) के प्रस्तुतीकरण से एब्सर्ड नाटक की शुरुआत मानी जाती है जिसका मंचन 5 जनवरी 1953 को इंग्लैण्ड में किया गया। इसके अतिरिक्त " द चेयर्स द लैसन, एण्ड गेम, द वर्ल्ड, स्प्रोनो आदि नाटक बड़े प्रसिद्ध हुए। ये नाटक युद्धों के फलस्वरूप उत्पन्न अराजकता हिंसा,भय ,मृत्यु,पारिवारिक घुटन आदि को बड़ीबारीकी से अभिव्यक्ति देते हैं। राजनैतिक तथा सामाजिक विसंगतियों, प्राचीन मूल्यों के विघटन ,अनाचार ,अविश्वास, रूढियों के प्रति विद्रोह तथा जीवन में व्याप्त अर्थहीनता को उजागर करने में ये नाटक(अर्थहीनताको उजागर करने मे नाटक)बड़े ही सक्षम हैं। जार्ज बर्नार्डशॉ ने निश्चय ही जिस मुक्तधारा और रंगमंच की इंग्लैण्ड में घोषणा की थी, वह सब इन नाटकों में बड़ी गहराई तक विद्यमान है।

हिन्दी साहित्य में प्रचलित प्रतीकनाटकों की तरह इन नाटकों में भी कहीं कहींचरित्र और दर्शक केबीच तादात्म्य बना रहता है। कहींकहीं तोकिसी नाटक में कथानक का बिल्कुल अभाव होता है। कथानक विहिनता को ध्यान में रखते हुए हम इसे स्थितियों का नाटक कह सकते हैं। घटनाओं या चरित्र का नहीं। विसंगत नाटक में चरित्र के विकास का भी कोई प्रश्न नहीं उठता और न हीकिसी सुनिश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने की सम्भावना ही होती है। मानवीय मूल्यों के ह्रास ,सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को अभिव्यक्ति देने के लिए पैलेसी, काव्यात्मक

बिम्ब, दु:स्वप्न, अतिकल्पना आदि के माध्यम से अतिरंजनापूर्ण कथावस्तु, विलक्षण चरित्र तथा अदभुत दृश्यों की योजनाकी जाती है, इसकी भाषा शैली शिल्प एवंसम्पूर्ण संरचना प्रतीकात्मक होती है इसी कारण से इस प्रकार के नाटकों के चरित्र प्राय: असामान्य अथवा सामाजिक दृष्टि से हेय होते हैं कभीकभी पात्र बिल्कुल गूंगा होता है जिसे दर्शक संकेतों और प्रतीकों द्वारा समझ सकते हैं, कभी कभी अभिनय में पात्र मुखौटों का उपयोग करते हैं । मुखौटें अभिनेताओं के दोहरे चरित्र का उदघाटन करते हैं कहीं कहीं तो ये नाटक बिल्कुल खोखले है न उसमें प्लाटहै न क्लाइमेक्स और न ही प्रारम्भ और न ही मध्य न अन्त, यदि कुछ है तो सिर्फ संवादों का सिलसिला जिसे प्रतीकों के जरिये ही समझा जा सकता है जिसे समझ पाना सामान्य दर्शक के बस की बात नहीं, इस प्रकारके नाटकों के लिए रंगसज्जा और पर्दे की खास आवश्यकता नहीं होती, और न ही दृश्य परिवर्तन के अन्तराल की ही आवश्यकता होती है, समूचा नाटक एकही दृश्य बंध पर घटित होता है कोइ भी परिवर्तन सांकेतिक अर्थपूर्ण तथाप्रतीकात्मक होता है । "द चेयर्स" की खाली कुर्सियाँ संसार की तात्विक शून्यता की प्रतीक हैं ।'द वल्र्ड सम्प्रोनों' कीउल्टी दिशा में चलती हुईघड़ी पति-पत्नी के विपरीत जीवन का प्रतीक बनकर प्रदर्शितहुईहैं, इसी प्रकार एण्डनेम कीभूरी रंग सज्जा महाप्रलय के बाद कीस्थिति का तथा कचरा पेटियाँ बीते हुए जीवन की व्यर्थता का प्रतीक है ।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के सम-सामयिक प्रतीक नाटकों पर निश्चय ही पाश्चात्य नाट्य साहित्य के विभिन्न वादों में से प्रतीकवाद का बड़ी गहराई के साथ प्रभाव पड़ा है शैली शिल्प और कथ्य की दृष्टि से पश्चिम के एब्सर्ड नाटक और हिन्दी के प्रतीक नाटकों में पर्याप्त समानता है अतः यह कहा जा सकता है, कि एब्सर्ड नाटक आधुनिक प्रतीक नाटकों का ही एक विकसित शिल्प है। मुद्राराक्षस के शब्दों में "एब्सर्ड नाटक यथार्थ की नये सिरे से तलाश के लिए आविष्कृत अभिव्यंजना पद्धति है यह उस यथार्थ को उद्घाटित करती है जो जड़ भाषा में दफन हो चुका था।[8]

अतः उपर्युक्त मन्तव्यों से यह सिद्ध हो जाता है कि भारतीय एवं पाश्चात्य नाटकों के विकास क्रम में प्रतीक नाटक का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, सम्पूर्ण विश्वसंस्कृति के आपसी मेलजोल के कारण पाश्चात्य रचना धर्मिता का भारतीय साहित्य पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है, और पड़ रहा है, चाहे वह कविता का क्षेत्र हो या कहानी का अथवा नाटक का समूचा हिन्दी साहित्य आज पाश्चात्य से प्रेरणा ले रहा है और यही मूलभूत कारण है कि हिन्दी साहित्य के समसामयिक नाटक भी इनसे अपना सम्बन्ध जोड़े हुए हैं।

3:- प्रतीक का धातुगत, कोशगत अर्थ तथा विभिन्न विद्वानों के मत:-

प्रतीक शब्द का प्रयोग वेदों में मिलता है जिसका प्रयोग रूप के अर्थ में किया गया है। 9. अभिधान रत्नमाला में प्रतीक को पुल्लिंग शब्द

-1,

का वाचक माना गया है । 10. मानक हिन्दी कोष में प्रतीक शब्द का अर्थ अंग, अवयव, अंश तथा प्रतिमा आदि के रूप में बताया गया है । 11. परन्तु अमरकोष में प्रतीक के तीन अर्थ अंग अवयव प्रतीक आदि बताये गये हैं ।

प्राचीन काल में धातुगत कोष का अर्थ कुछ भी रहा हो परन्तु आज प्रतीक शब्द अपने सामान्य अर्थ की सीमा को छोड़ चुका है और आज उसका प्रयोग किसी विशिष्ट अर्थ के संपादन के लिए अथवा किसी तथ्य या सन्दर्भ की अभिव्यक्ति बनकर सम्प्रेषण का एक मूलभूत माध्यम बन चुका है ।

जब हम सामान्य भाषा में अपनी बात नहीं कह पाते या सामान्य भाषा को हम प्रयोग की दृष्टि से सम्प्रेषण के लिए सक्षम नहीं पाते तब हम एक ऐसी भाषा की सृष्टि करते हैं जो प्रतीकात्मक होती है ।

4. प्रतीक और प्रतीकात्मकता:-

भारतीय साहित्य में प्रतीक का महत्वपूर्ण स्थान है । और इसका प्रयोग उतना ही पुराना है जितना कि पृथ्वी पर सृष्टि के आरम्भ का । जब से मनुष्य ने बोलना सीखा तब से प्रतीक की भी सृष्टि हुई, मनुष्य जब सीधे सरल ढंग से अपनी बात नहीं कह पाता तब वह भाषा सशक्त और प्रभावोत्पादक बनाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करता है । कभी कभी हम दुष्ट व्यक्ति को दुष्ट न कहकर साँप, अजगर, चीता, भेड़िया, कुत्ता आदि कह देते हैं, तथा ईश्वर को ईश्वर न कहकर स्वर्णकार या कुम्भकार तथा कुण्डल या घड़े को जीवात्मा कहकर भाषा को सामान्य

बोलचाल की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयास करते हैं। बेदों, उपनिषदों, आरण्यकों और ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्प बाज शुक, मेढक पक्षी आदि शब्दों का प्रचलित प्रयोग मिलता है। जहाँ पर सर्प बाज आदि मृत्यु के प्रतीक हैं, मेढक जीव का प्रतीक है, वहींपर पक्षी आत्मा या प्राण का प्रतीक है। मूर्ख को हम मूर्ख न कहकर गधा बैल कुछ भी कह सकते हैं। और यह प्रयोग भाषा मेंअनादि काल से होता चला आ रहा है, अज्ञेय का कहना है कि "यहक्रिया भाषा में निरन्तर होती रहती है और भाषा बिकास की एकअनिवार्य क्रिया है चमत्कार मरता रहता है, और चमत्कारिक अर्थ अभिधेय बनता रहता है। या यों कहे कि कबिता की भाषानिरन्तर गद्य की भाषा हो जाती है। इस प्रकार कबि के सामने हमेशा चमत्कार की सृष्टि कीसमस्या बनी रहती है वह शब्दों को नया संस्कार देता चलता है और ये संस्कार प्राय: सार्व-जनिक मानस में पैठकर ऐसे हो जाते हैं।3· वस्तुत: प्रतीक का अर्थ है प्रचालत अर्थ से किसी अन्यार्थ की प्रतीति कराता है, जिस प्रकार लक्षणा शक्ति से भाषा में उसके बिधमान गूढ़ या अन्यार्थ की प्रतीति कराती है, 14· उसी प्रकारप्रतीक भी। इस प्रतीक को हम व्यंग्य रूपक, अध्यवसित रूपक रूपकातिशयोक्ति, अन्योक्ति, अप्रस्तुत प्रशंसा, व्याजस्तुतिभी कह सकते हैं। वस्तुत: जहाँ प्रतीक होगा वहाँ लक्षणा अवश्य होगी वहाँ प्रतीक अवश्य होगा। भारतीय काव्य शास्त्रियों ने लक्षणा को काव्यभाषा के प्राणतत्त्व केरूप में स्वीकार किया है।5· मम्मट ने लक्षणा को आरोपित क्रिया बताया

है ।16. उनके अनुसार मुख्यार्थ मेंबाधा पहुँचने मुख्यार्थ का योगहोने, तथा रूढ़ि अथवा प्रयोजन बस किसी अन्यार्थ की प्रतीत होती है उसे लक्षणा कहते हैं। पाश्चिम के प्रतीक वादी विचारक डब्ल्यू के• बिमसाट के मत को स्पष्ट करते हुए डा• नागेन्द्र ने यहसिद्ध किया कि काव्य अन्ततः लक्षणा पर आधारित होता है और वह प्रतीकात्मक होता है ।17•अतः यह सिद्ध हो जाता है, कि "यदि लाक्षणिक भाषा काव्य का प्राणहै तो प्रतीक लाक्षणिकभाषा का । डा• राम चन्द्र वर्मा ने प्रतीक की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि प्रायः हमारे ध्यान में ऐसीबहुत सी बातें और वस्तुयें आती हैं, जो हमारे अगोचर ,अदृष्य या अप्रस्तुत होती है और तब उसके आकार कार्य व्यवहार व्यापार आदि कोकल्पना करक चित्रण रेखन आदि के द्वारा उसका कोई संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करत हैं और उसी को मूलवस्तु का प्रतीक कहत है ।19• वस्तुतः प्रतीकों से पूर्वअनुभूत पदार्थों का पुनः स्मरण हो उठता है, किसी देवता का प्रतीक सामने आने पर जिस प्रकार उसके स्वरूप और उसके विभूति की भावना चट मन में आ जाती है, उसी प्रकार काव्य मेंआया हुइ कुछ वस्तुयें विशेष मनोविकारों या भावनाओं को जागृत कर देती हैं——— सर्प में कुटिलता और क्रूरता का ,अग्नि से तेज का और क्रोध का ,वाणी से वाणी का या विधा काचातक से निःस्वार्थ प्रेम का संकेत मिलता है । 20•आचार्य शुक्ल जीके इस मन्तव्य से यहस्पष्ट हो जाताहै, कि प्रतीक वह अप्रस्तुत विधान है जो कुछ खास वस्तुओं केलिए संकेत के रूप में रूढ़ होता है, प्रतीककिसी अप्रस्तुत सूक्ष्म

सौन्दर्य की व्यंजना ही नहीं, करता वरन उसके रूप गुण कार्य का समूचा दृश्य निर्मित करता है जिसका सफल प्रयोग आज के नाट्य साहित्य में देखा जा सकता है ।

5. नाट्य कृतियों का प्रतीक योजना :-

समकालीन युग की काव्य तथा नाट्य कृतियों पर प्रतीक के प्रयोग की पूरी छाप आज परिलक्षित होती है । समकालीन नाट्य रचनाधर्मियों ने प्राचीन कथा सन्दर्भों पौराणिक आख्यानों चारित्रिक प्रवृत्तियों तथा वेद एवं पुराण कालीन पात्रों को नये नये सन्दर्भों के अनुसार ढालकर नया अर्थ भरने तथा प्राचीन गाथाओं को आधुनिक सन्दर्भों में सम्प्रेषित करने का प्रयास किया है अभिमन्यु, एकलव्य, द्रौपदी, द्रोणाचार्य कंस, दुर्योधन, शकुनी, शंबूक जैसे ऐतिहासिक चरित्रों को प्रतीक मानकर रचनाकारों ने सत्ताकुर्सी और राजनीतिक छल छद्म को अपना केन्द्र बिन्दु बनाया और नई नई अभिव्यंजनायें प्रस्तुत की। यही कारण है कि त्रिशंकु, शम्बूक का हत्या, रस गन्धर्व, द्रौपदी, कथा एक कंस की, मिस्टर अभिमन्यु, एकऔर द्रोणाचार्य आदि नाटक समकालीन युग की विसंगतियों और मनोभावों की सचोट अभिव्यक्ति देते हैं । डा० लक्ष्मीनारायण लाल का मादाकैक्टस और उसके प्रमुख स्त्री-पुरुष पात्र नर या मादा कैक्टस के प्रतीक हैं कैक्टस नये इंसानों का प्रतीक है, वनस्पति शास्त्र केअनुसार मादा कैक्टस के सम्पर्क में आने से नर कैक्टस सूखजाता है, इसी सूखनेके डर से अरबिन्द अपनी पत्नी सुजाता को छोड़ देता है । और आनन्दाके साथरहने लगता है ।

और परिणाम यह निकलता है, कि नर कैक्टस अरबिन्द के सम्पर्क में आकर मादा कैक्टस आनन्दा सूख जाती है इस प्रकारनाटक में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक सुधीर का संवाद पूर्णतया प्रतीकात्मक है । नाटक में संगीत से लेकर कार्य तक घटनाओं से लेकर पात्रों तक नीलाम के बाजे से अनाथालय के बच्चों के गीत तक, मादा कैक्टस से लेकर मुर्गाबी चिड़िया तक, प्रतीक ही प्रतीक है । 21. इसी प्रकार मन्नू भण्डारी का बिना दीवारों का घर पति-पत्नी की गलत फहमियो के परिवेश काप्रतीक है । जिसमें अजित और शोभारहते हैं । ज्ञानदेव अग्निहोत्री द्वारा लिखित नाटक शतुमुर्ग आज केसत्ताधारी राजनीतिज्ञों का सटीक प्रतीक है । मोहन राकेश के आधे अधूरे नाटक में पुरुष एक दोतीनचार आधुनिक व्यक्ति के अधूरे पन के प्रतीक हैं । कमरे में तीन तरफ झांकने वाले तीन दरवाजे तीन पुरुषोंके प्रतीक हैं । जिनसे होकर सावित्री गुजरती है । अधटूटा टी सेट पत्री कितावें, अस्तव्यस्त पडी चीजे,, टूटाकुर्सियां , चरित्रों के अधूरेपन तथा टूटतेहुए पारिवारिक सम्बन्धों का प्रतीक हैं । इसी प्रकार सुरेन्द्र वर्मा का नाटक द्रौपदी की नायिका सुरेखा महाभारत के पांच पत्नियों वाली द्रौपदी के अनुभवों से होकर गुजरती है बृजमोहन शाह का त्रिशंकु'नाटक में आज का डिग्रीधारी युवक त्रिशंकु काप्रतीकहै, जो आधुनिक व्यवस्था में अपने आपको मिस फिट पा रहा है । बिपिन कुमार अग्रवाल के लोटन नाटक में कुलतीन प्रतीक मुख्य रूप से आये हैं। जिनमें लोटन जड़ मनुष्य का डाकघर, जड़ता के परिवेश का और डाकगाड़ी

जन आन्दोलन का प्रतीक है। डा०सुरेश चन्द्रशुक्ल का नाटक आकाश झुक गया ह, में वस्तु की प्रतीकात्मकता अत्यन्त सार्थक है संसार मठ संसार का प्रतीक है, स्वामी चुगानन्द आज भी धार्मिकता के जीवन्त प्रतीक हैं। दया प्रकाश सिन्हा का नाटक कथा एक कंस की में कृष्ण और कंस को मानवीय रूप में उतारा गया है कंस प्रजा उत्पीड़क अत्याचारी, अराजकता तथा कुव्यवस्था का प्रतीक है कृष्ण इस व्यवस्था के विरूद्ध उठ खड़े हुए पीड़ित जनसमुदाय के संगठित नेतृत्व के प्रतीक हैं, इसी प्रकार शंकर शेष का नाटक एक और द्रोणाचार्य एक महत्वपूर्ण प्रतीक नाटक है। यह प्रस्तुति और लेखन शैली के स्तर से कुछ भिन्न शिल्प का होते हुए वस्तु समरूपता की स्थिति में आधुनिक और पौराणिक दोनों है। सम-सामयिक समस्या को लेकर चलने वाला डा० रमेश चन्द्र शुक्ल का नाटक कुत्ते प्रतीक नाटक की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसी प्रकार गिरिराज किशोर का प्रजा ही रहने दो, नाटक महाभारत की कथा पर आधारित एक विस्तृत प्रतीक नाटक है। इस नाटक की वस्तु-प्रतीकात्मकता महत्वपूर्ण ह। इस नाटक में द्रौपदी छलबल से सतायी हुई प्रजा का प्रतीक ह। और धृतराष्ट्र अंध व्यवस्था का प्रतीक ह। युधिष्ठिर धर्म और सत्य के प्रतीक है। इसी प्रकार प्रतीक नाटकों की शृंखला मे डा० सुरेश चन्द्रशुक्ल का नाटक "भस्मासुर अभी जिन्दा है। एक सशक्त प्रतीक नाटक है इस नाटक का भस्मासुर आज के बड़े पेटवाला कपटी और धूर्त नेताओं का प्रतीक है। जो सबकुछ खाकर भस्म कर

लेता है । इस नाटक के वस्तु-शिल्प और उसकी प्रतीकात्मकता का वास्तविक महत्व उसके मंचीय सम्प्रेषण के रंगकौशल से उजागर होता है । इस प्रकार प्रतीक नाटकों की वस्तु सम्प्रेषण की प्रविधि ने आज नये-नये आयाम ग्रहण किये हैं । जिसमें नाट्य कृतियों की प्रतीक योजना हमारे समक्ष दृष्टिगोचर होती है ।

जहाँ तक नाट्य कृतियों का प्रतीक योजना से तात्पर्य है नाट्य रचना को दर्शक दीर्घा के समक्ष सही रूप में प्रस्तुत करना है । निश्चय ही इन नाटककारों ने यथार्थवादी समस्याओं को सम्प्रेषित करने के लिए नाट्यकृतियों को प्रतीकात्मक रूप देने का प्रयास किया है जो शैली और शिल्प की दृष्टि से सराहनीय है ।

नाट्यकृतियों की प्रतीकात्मकता और उनका समायोजन:-

जैसा कि पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है कि समकालीन युग में लिखे जा रहे नाटकों सन्धि संध्यंग पंचकार्यावस्थाओं और अर्थ प्रकृतियों जैसा अब कुछ नहीं देखने को मिलता । समसामयिक रचनाओं में प्रतीकात्मक, सांकेतिक एवं अन्योक्ति मूलक सन्दर्भों के माध्यम सम्प्रेषित करने का सफल प्रयास रचनाकारों न किया है पौराणिक तथा ऐतिहासिक सन्दर्भों का उपयोग आधुनिक समस्याओं तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बड़ी बारीकी से किया गया है । इस दिशा में कोणार्क, पहला राजा, लहरों का राजहंस, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक आदि नाटक मुख्य हैं ।

कथा एक कंस की, यक्ष प्रश्न, और प्रजा ही रहने दो, आदि नाटकों में प्राचीन कथा का मात्र ढाँचा भर लिया गया है । कभी कभी पात्रों के चारित्रिक संस्कारों सार्वयुगीन स्वरूप देने का प्रयास किया गया है । शम्बूक की हत्या, नाटक इससे आगे की स्थिति है । सम सामयिक सामाजिक और राजनैतिक विसंगतियों को सम्प्रेषित करने में बिना दीवारों के घर आधे-अधूरे द्रौपदी, नरमेध, कर्फ्यू, तिलचट्टा, तेंदुआ, कुत्ते आदि नाटक मुख्य हैं । अधूरी कथावस्तु से सजे-संवरे नाटकों में शुतुरमुर्ग, त्रिशंकु, रसगन्धर्व, अब्दुल्ला दीवाना, आकाश झुक गया, सिंहासन खाली है, आदि नाटक हिन्दी साहित्य की सर्वोच्च उपलब्धियों में से है । इस दिशा में लक्ष्मी नारायन लाल का नाटक मादा कैक्टस प्रतीक नाटकों की श्रृंखला में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । नाट्यकृतियों का प्रतीकात्मकता और उनके समायोजन के लिए निम्न नाटकों का परिचय और अध्ययन आवश्यक हो जाता है ।

1. अंगारों की मौत:-

शम्भू दयाल सक्सेना

प्रस्तुत नाटक में 'अंगारों की मौत' स्वतन्त्रता प्रेमी क्रान्तिकारी देशभक्तों का प्रतीक है। इस नाटक में स्वतन्त्रता प्रेमी क्रान्तिकारियों के प्रति किये गये अंग्रेजों के अत्याचारों, षडयन्त्रों का चित्रण है। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु आजादी प्राप्ति हेतु अनेक प्रकार की यातनायें सहते हैं। परन्तु वे अंग्रेजों की दमन कारी नीति के समक्ष नहीं झुकते हैं, तीनों हंसते हंसते फांसी के फन्दे पर चढ़ जाते हैं उनका बलिदान देखकर अंग्रेजी सरकार भी कांप उठती है। नाटक में चन्द्रशेखर, भगत सिंह गुरुदेव तथा सुखदेव का घोषणा " हमारे रक्त की एक बूंद अंग्रेजी सरकार से बदला लेकर रहेगी। " कि घोषणा के साथ ही नाटक का अन्त हो जाता है।

2. चिराग की लौ=   रेवती सरन शर्मा

चिराग की लौ रेवती सरन शर्मा द्वारा लिखित एक प्रतीक नाटक है । शर्मा जी ने अपने नाटक के माध्यम से जहां एक ओर सामाजिक रूढ़ मान्यताओं व जड़ीभूत मान्यताओंपर प्रहार किया है तो दूसरीओर वहीं पर समाज में व्यापक रूप से फल फूल रहे भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, जमाखोरी तथा पूँजीपतियों द्वारा किया जा रहे अत्याचारों का पर्दाफाश किया है । इनके प्रतीक नाटकों में चिराग की लौ, अंधेरों का बेटा आदि नाटक इनके जागरूक व स्वस्थ विचारों को अभिव्यक्त प्रदान कर रहे हैं । "चिराग की लौ " में नाटक का नायक किशोर गरीब घराने का इमानदार इनकम टैक्स आफिसर है, उनकीपत्नी तारा धनी बाप की बेटी है वह किशोर से प्रेम विवाह करके अपनी गृहस्थी बसाती है अचानक अपनी सखी के सम्पर्क में आने पर वह भौतिक चेतना के ओर प्रभावित हो जाती है । तारा का भौतिक सुख साधनों के प्रति आकर्षण बढ़ता जाता है वह कपड़ों, बच्चों के उपहारों, शापिंग आदि से रानी के द्वारा खरीद ली जाती है, बढ़ते भौतिक आकर्षण से उसका परिवार बिखराव की स्थिति में आ जाता है । किशोर तारा के व्यवहार से क्षुब्ध हो जाता है । क्योंकि तारा उसकी इच्छा के विरूद्ध गिरीश के आफिस में नौकरी करने लगती है गिरीश दलाल का काम करता है वह बड़े बड़े सेठों से पैसा ऐंठकर उनके बहीखातों का मामला सुलझाता है रानी का पति जयंत अपने गड़बड़ मामले को सुलझाने के लिए तारा की मदद लेता है । इसके अतिरिक्त वह साढ़े 5 हजार रूपये को लालच में छापा मारकर लाये हुए दस्तावेज को किशोर की अनुपस्थिति में गिरीश को दे देती है । और रेडियो सेट, सोफा सेट, गलीचा आदि खरीद लाती है । आदर्श किशोर यह सब सहन नहीं कर पाता । परिणामत: पति-पत्नी के मधुर सम्बन्ध नष्ट हो जाते हैं । प्रस्तुत नाटक में किशोर आदर्शवादी चेतना का प्रतीक है । तारा, रानी, जयंत, धनी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले भौतिक चेतना का प्रतीक हैं ।

3• माटी जाग रहे-

ज्ञानदेव अग्निहोत्री

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के माटी जागरे, शुतुर्मुर्ग आदि प्रसिद्ध प्रतीक नाटक है। उनके नाटकों में एक ओर गांव की माटी की सौंधी महकता है, तो दूसरी ओर राजनैतिक भ्रष्टाचार दूर करने की ललक।

'माटी जाग रहे, में साठोत्तर कालीन गांवों में परिलक्षित चेतना को उद्घाटित कियागया है, आधुनिक युगमें उत्तरोत्तर शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने ग्रामीण जीवन में नई जागरूकता तथा स्वाधिकारों के प्रति चेतना का सन्देश दिया है।

भोला गांव का सीधा साधा किसान है, वह अनपढ़ है किन्तु समझदार है। भोला की पत्नी छल प्रपंचों से दूर निश्छल हृदयानारी है। गांव का साहूकार दीनदयाल धूर्त सूदखोर है। वह गांव के भोले निर्धन व्यक्तियों को फंसाकर उसकी अशिक्षा और मजबूरी का लाभ उठाना चाहता है लेकिन बसंत व उसके मित्र प्रकाशके शहर से वापिस आने पर महाजन की दाल नहीं गलती। इसलिए वह दोनों को कट्टर शत्रु बन जाता हैबसन्त व प्रकाश बिखरे हुए गांव को एकताके सूत्र में पिरोकर गांव की उन्नति व खुशहाली के कृषि के नये नये तरीके बनाते हुं अच्छे बीज और नये औजारों का प्रयोग करते हैं जिसके फलस्वरूप गांव की उन्नति होती है और गांव के लोग जागरूक व चेतनशील बन जाते हैं। प्रस्तुत नाटक मेंभोला व गंगा पुरानी पीढ़ी केप्रतीक के रूप में चित्रित है जो जाति पांति को मानते हैं किन्तु शिक्षित बसंत के कहने पर अपनी पुत्री रधिया का विवाहनिम्न जाति के प्रकाश के साथ करने को तैयार हो जाते हैं और साहू की मृत्यु के पश्चात उसकी पुत्री बिंदिया का विवाह अपने पुत्रबसंत के साथ तय कर देते हैं इस प्रकार नाटककार ने शिक्षा के आलोक में निरर्थक सामाजिक बंधनों के अन्धकार को दूर किया है शिक्षा ने आधुनिक व्यक्ति के चिन्तन व कार्यकलापों में नई मानसिकता तथा वैचारिकता का सन्देश दिया है।

५. बिना दीवारों के घर:-

मन्नू भण्डारी का नाम हिन्दी कहानी व उपन्यास विधा के लिए प्रसिद्ध तो है ही, परन्तु नाट्य जगत के लिए भी वह अपरिचित नहीं रहा इनका एक मात्र नाटक बिना दीवारों के घर, अपनी सफल अभिव्यक्ति के लिए बहुत चर्चित हो चुका है। आधुनिक व्यक्ति की मनस्थितियों व वैचारिक द्वंद को लेखिका ने बड़ी सूझ बूझ के साथ चित्रित किया।

शिक्षित आत्मनिर्भर नारी स्व अस्तित्व के प्रति जागरूक हो रही है, पति के अत्याचारों को वह अब मूक बनी सहन नहीं कर सकती। अपने एवं स्व अस्तित्व की रक्षा हेतु वह घर की चारदीवारी कोभी लाँघ रही है " बिना दीवारों के घर में" लेखिका ने इसी आधुनिक सत्य को उद्घाटित किया है, नाटक की नायिका शोभा जब अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक होती है तो उसके पति केअहम पर चोटलगती है। जिसे वह सहन नहीं कर पाता परिणामत: घर बिखर जाता है।

विवाह पूर्व शोभा केवल दसवी पास थी, किन्तु बाद में अपने पति आजतद्वारा शिक्षा व संगीत के क्षेत्र में प्रोत्साहित की जाती है लेकिन शोभा का बढ़ती प्रसिद्धि और व्यस्तता से अजित झुझला उठता है। वह उसे शंका और तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगता है। और अपने दोस्त-जयंत को भी इसमें दोष देता है शोभा अपने आत्मविश्वास के सहारे बढ़ती जाती है। वह घर की देखभाल का, बच्ची को पढ़ाने का यथाशक्ति ध्यान रखती है। फिर भी उसे पति से बदलेमें तिरस्कार और अंत में दूरी मिलती है शोभा स्वाभिमानी नारी है। उसका आत्मविश्वास कालेज की प्रिंसिपल बनने केबाद और भी निखर जाता है उसके स्वाभिमान को अजित का परम्परागत पौरुष सहन नहीं कर पाता उसे शोभा का प्रत्येक कार्यगलत और अहम पूर्ण लगता है उसे शोभा द्वारा बोला गया प्रत्येक ~~कथन~~ वाक्य अहम पूर्ण लगता है। अजित

अजित शोभा और जयत को शंका की दृष्टि से देखता है इसके इस दुर्व्यवहार से दूरकर शोभा न चाहते हुए भी घर छोड़ने को विवश हो जाती है। शिक्षा और आर्थिक निर्भरता नारी स्वतन्त्रता स्व अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देती है किन्तु पुरुष नारी के उस स्वरूप को स्वीकार नहीं कर पा रहा है फलत: परिवारमें टकराव अलगाव तनाव और अन्त में टूटन की स्थिति उपस्थित हो जाती है ।

लेखिका नेमीना व जयंतके माध्यम से भी नारी में स्वाभिमान के भाव को उद्घाटित किया है, मीना से विवाह करने के पश्चातजयंत अपनी स्टेनों से प्रेम करने लगता है, मीना इसे स्वीकार नहीं कर पाती और जयंत से तलाक लेकर "समाज सेवा" के कार्यों में लगजाती है, इस प्रकार बिना दीवारों के घर में मन्नू भण्डारी ने नारी व पुरुष में बढ़ते समानता के भाव को प्रदर्शित किया है । शोभा आदर्श युक्त " व्यावहारिक चेतना से प्रभावित है । अजित प्रतिक्रिया वादीकुण्ठित व ईष्यालु पात्र है । जयंत और मीना दोनों - व्यवहारिक चेतना"से युक्तहैं । जीजा आदर्श चेतना सेप्रभावित है, उनकेचिन्तन व व्यवहार में आदर्श वादी भावना दृष्टिगोचर होती है, लेखिका ने,प्रस्तुत नाटकमें नारी स्वतन्त्रता,आत्मनिर्भरता तथा समानता के भाव-बोध के आधार पर टूटते परिवार का चित्रण कियाहै ।

-----24

5. रूपया तुम्हें खा गया:-

यह नाटक भगौती चरण वर्मा की एक सुप्रसिद्धि कृति है। यह नाटक एक समस्यामूलक नाटक है। इस नाटक में अर्थ के आधार पर मानव के आन्तरिक संघर्ष की कहानी है। आज की भौतिकवादी प्रवृत्ति ने पारिवारिक सम्बन्धों, प्रेम व रिश्तों को खोखला तथा भावनात्मक शून्यता से भर दिया है। समकालीन व्यक्ति सुख साधनों की होड़ में रूपये को ही अपना धर्म, इमान तथा भगवान समझता है, वह यह भी भूल गया है, कि धन से सुख सुविधा खरीदे जा सकते हैं। परन्तु प्यार, स्नेह, ममता, सन्तोष व शान्ति नहीं खरीदा जा सकता है प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने इसी - आधुनिक सत्य को उभारा है। नाटक कीकथावस्तु सेठ मानिकलालकी मन: स्थितियों तथा पारिवारिक स्थितियों का चित्रण करतीहै। सेठ मानिकलाल एक दफ्तर में काम करने वाला एक मामूली सा कर्मचारी था। दस हजाररूपया गबन कर लेने के बाद वह सेठ बन बैठा। उसकी दृष्टि से जो ईमानदार है, धर्म पर कायम रहता है, वह न ईमानदार कहलाता है, न धर्मात्मा कहलाताहै, जिनके पास पैसा है, उसकी सभी पूजा करते हैं। सेठ की पत्नी अभावग्रस्त जीवन में पति की सेवा करती थी, परन्तु पति के बीमार होने पर वह पैसों को ही महत्व देती है और मसूरी चली जाती है परन्तु मानिकलाल यह अनुभव करता है कि आजकल वह धन को महत्व देता रहा जो अनुचित था वास्तव में उसके पुत्र पुत्री तथा पत्नी उससे नहीं, परन्तु उसके पैसे से प्रेम करते हैं।

आधे अधूरे :-

मोहन राकेश

आधुनिक नाटकों के मसीहा मोहन, राकेश, ऐसे नाटककार है, जिन्होनें आधुनिक नाटकों को कथ्य शिल्प और भाषा के नये तेवर से सम्पन्न किया है । उनके तीनों नाटक आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस और आधे अधूरे प्रतीक शैली में लिखे गये, सुप्रसिद्ध नाटक है ।

उनका नाटक आधे अधूरे वर्तमान जीवन की विडम्बनाओं व जटिलताओं को रेखांकित करता है । यह मध्यमवर्गीय जीवन के आर्थिक संकट मूल्यहीनता तनाव कुंठा का प्रामाणिक दस्तावेज ।

नाटक की कथावस्तु मध्यमवर्ग से निम्न मध्यमवर्ग के स्तर पर पहुंचे हुए परिवार को केन्द्र बनाकर चला है । परिवार में बेकार लिजलिजा, आत्म-विश्वास हीन, कुंठित व्यक्ति महेन्द्रनाथ है । अपने पति से असंतुष्ट घर के स्तर को ऊँचा उठाने के प्रयत्न से टूटी हुई सावित्री पूर्ण पुरूष की तलाश में भटकती है, और शिवजीत जगमोहन, मनोज, जुनेजा, आदि पुरूषों मेंपूर्ण पुरूष कोतलाशते तलाशते निराश हो जाती है । अपनी मां के प्रेमी के साथ भागी हुई लड़की बिन्नीहै । युवा बेकार विक्षिप्त सा लड़का अशोक है । जोअभि-नेत्रियों की तस्वीरें काटता रहता है । सैक्स सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ता है, और अभिनेत्रियों की तस्वीरे अवारा की तरह काटता है । अवारा की तरह घूमता है छोटी लड़की बिन्नी है वह किशोरावस्था में सैक्स सम्बन्धी चर्चा करती है और जिद्दी है । नाटक की सम्पूर्ण कथा इन्हीं लोगों के इर्द गिर्द घूमती है । सावित्री अशोक की नौकर दिलाने के लिए बास सिंहानियों को खुश रखती है । परन्तु बदले में उसे पति औरबेट बेटियों से तिरस्कार मिलता है । घर व पति के वातावरण से घुरी सावित्री जगमोहन के साथ जाने का निश्चय करती है । लेकिन जगमोहन उसकी प्रौढ़ावस्था को देखकर इन्कार कर देताहै । नाटक का अन्त कुंठा ग्रस्त सावित्री व महेन्द्रनाथ के लौट आने से होता है । बड़ी लड़की बिन्नी भागजाती है । फिर उसी घर में लौटआती है क्योंकि

अपने साथ इस घर से कुछ चीज वहसाथ लेकर गयी है । जो मनोज के साथ उसे रहने नहीं देता ।

प्रस्तुत नाटक में बौद्धिकता से उत्पन्न कुंठित मनस्थितियाँ ही चित्रित है ।

7. वाह रे इंसान:-

-रमेश मेहता-

रेडियो नाटकों तथा हास्य नाटकों के लिए रमेश मेहता का विशिष्ट स्थानहै । इनके नाटक हास्य की आड़ में जीवन की जटिलताओं, विषमताओं तथा परम्परागत रूढ़ियों का प्रतीक बनकर करारा प्रहार करते हैं ।

प्रस्तुत नाटक "वाह रे इंसान" में नाटककार ने बिभिन्न व्यक्तियों की मन: स्थिति का चित्रांकिया है । भीखू, धनसेवक, क्रान्ति, वकील, डाक्टार, सम्पतराय, आदि पात्र अलग अलग प्रतिनिधित्व कराने वाले व्यक्ति हैं ।

निम्न वर्ग की पुरानी पीढ़ी का प्रतीक भीखू उच्च वर्ग द्वारा किये गयेअत्याचारों को कर्मों का फल समझकर अपने मालिक सम्पत राय के प्रति-आजीवन वफादारबना रहता है । किन्तु अन्त में उसे उपकार का बदला मिलता है सिर्फ मौत । यथार्थवादी चेतना से प्रभावित डाक्टर व वकील जिन्दगीभर सम्पतराय को ठगते रहे । धन सेवक तथाक्रान्ति एक ही वर्ग मेंमध्यम वर्ग में प्रतिनिधित्व करते हैं । धनसेवक पापलूस लिजलिजा स्वार्थी यथार्थवादी-व्यावहारिकचेतना से युक्त हैं । जबकि क्रान्ति अत्याचारके प्रति विद्रोहकरेन वाला मजदूरों व गरीबों का हमदर्दनिडर ,आदर्शयुक्त, व्यवहारिक चेतना से प्रभावित है । तुलसी निम्नवर्ग की युवापीढ़ी की प्रतीक है । वह अपने मालिक सम्पत राय से टक्कर लेती है, वहआदर्श चेतना से युक्त चेतनाशील नारी का प्रतीक है । सम्पतराय धनी वर्ग का प्रतीक विलासी और अत्याचारी है, किन्तु दिखावे केलिए धर्मात्मा बना है, धर्मशाला, अस्पताल तथा स्कूल आदि खुलवाता है, मजदूरों को क्रीड़ा मात्र समझता है । क्रान्ति जब उनके अत्याचारों को विरुद्ध आवाज उठाता है तो उसे गिरफ्तार करवा देता है नाटककार ने यहां स्पष्ट किया है, कि सम्पतराय जैसे धनी व्यक्ति कानून

व समाज को खरीद लेते हैं और उसका अपने हित के लिए उपयोग करते हैं ।

आधुनिक युग में भौतिकता से प्रभावित व्यक्ति नैतिक व पारिवारिक मूल्यों को नकार रहा है । धन सेवक ऐसा ही पात्र है जो धन के लालच में अपनी पुत्री जानकी को सम्पत राय डाक्टर व वकील जैसे भेड़ियों के समक्ष शरीर नुचवाने के लिए छोड़ देता है । धन के समक्ष वह पाप पुण्य पवित्रता आदि को निरर्थक मानता है ।

नई पीढ़ी के तुलसी व क्रान्ति भी सभी वर्गों द्वारा किये गये अत्याचारों को सहन नहीं करते । वह मालिक को उसके किए की सजा देने में विश्वास करते हैं । इस प्रकार नाटककार ने आधुनिक पीढ़ी की जागरूक शक्ति को स्पष्ट किया है ।

युवा पीढ़ी पुराने अन्ध विश्वासों सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ रही है । प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने मध्यम वर्ग की अंधी दौड़ को भी उद्घाटित किया है । धन सेवक अन्दर से टूटा हुआ तिलमिलाता है । और घुटता रहता है, किन्तु धन प्राप्ति हेतु धनी वर्ग का चापलूस बना रहता है । मुंह पर - मुस्कराने का मुखौटा चढ़ाये रहता है इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने भौतिकवादी चेतना से प्रभावित समकालीन व्यक्ति की टूटती नैतिकता मूल्यहीनता को उजागर किया है ।

8. चारपाई : -

नटरंग 27अंक रामेश्वर प्रेम

रामेश्वर प्रेम कृत नाटक "चारपाई" समकालीन व्यक्ति की विसंगतियों के साथ साथ महानगरीय जीवन की आवास समस्या का प्रतीक है। यह नाटक मध्यम वर्गीय परिवार की आर्थिक संकट व आवास समस्या से प्रभावित नैतिकता और मानसिकता को अभिव्यक्ति करता है। मध्यमवर्गीय परिवार आधुनिक जटिलताओं से दूर रहे हैं। परिवार में परस्पर स्नेह का भाव घटता जा रहा है। वे एक दूसरेके बोध समान अजनवी बने हुए हैं। पारिवारिक मधुरता का स्थान खीझ, आतंक, झुझलाहट तथा आशंकायें ले रही है और पति पत्नीका प्रेम औपचारिक मात्र बनकर रहगया है। प्रस्तुत नाटक में खपरैल की छत, ठूंठ, सूखी झुकी हुई टहनियाँ, गद्दे, कपड़ों का गट्ठर आदि आधुनिक जीवन को विसंगतियाँ एवं संकुचित मनोवृत्तियों के प्रतीक है। नाटक के पात्र बूढ़ेआदमी, बूढ़ी स्त्री, पुरुष, प्रौढ स्त्री-पुरुष, तेरह साल की शीलू और 10 साल का छोटू ये सब एक कमरेमें ठुसे हुए हैं। जहाँ न नींद है, और न आराम बल्कि चिंता है। कल बाबूजी आयेंगे तो चारपाई कहा बिछेगी स्त्री का बात बात मेंचिढ़ना, पुरुष का झुंझलाना या उनके स्वभाव को दोष देना, बच्चोंको नींद न आना स्त्री का उन पर चिल्लाना, शीलूका भुनभुनाते हुए गट्ठर तक पहुँचाने केलिए घोड़ा बनना छोटू का कमरे में पेशाब करना तथा चारपाईके नीचे दुबक जाना आदि तथ्य मानसिक विकृति विवशता तथा संघर्षरत जीवन की तीखी अभिव्यंजना करते है नाटक के अन्त मेंबूढेकी घुटन तथा अकेले पन की ऊब फूट पड़ती है उसे सम्बन्धों की जड़तामें मौत सा अहसास होता है। और बूढ़ा अपने अस्तित्त्व के लिए बेचैन हो जाता है। बूढे की नातआर चारपाई को बांधकर पटकने से ही इस नाटक का अन्त हो जाता है। इस प्रकार यह सम्पूर्ण नाटक निम्न मध्यम वर्गीय व्यक्तिकी जीवन को जीने की कोशिश सम्बन्धों की रिक्तता

घुटन को यथार्थ रूप से अभिव्यक्त करता है । महानगरीय जीवन एक ओर आर्थिक संकट से जूझ रहा है तो दूसरी ओर आवास समस्या ने उसे तोड़ दिया है नाटक में चित्रित गुदे कपड़े व गट्ठर नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रतीक हैं । इस नाटक में सम्पूर्ण पात्र अपनी सीमाओं से जकड़े हुए निष्क्रिय हैं । वे मूक दर्शक बन जीवन की विडम्बनाओं व जटिलताओं को भोग रहे हैं उससे विद्रोह नहीं करते छुटकारा पाने का प्रयत्न भी नहीं करते । केवल बूढ़ा पात्र ही अपने दायित्व के प्रति सचेत है ।

9. मरजीवा (1972) मुद्राराक्षस
==========================

विचित्र कथ्य तीखे व व्यंग्यात्मक संवाद तथा झकझोर देने वाली मानवीय मन:स्थिति को नाटकों में स्थान देने वाले "मुद्राराक्षस" नाटक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान बना चुके हैं । इनके नाटक समाज में छिपे, दबे, पक्षों को उदघाटित कर समाज की एक दूसरी तस्वीर प्रस्तुत करते हैं ।

मुद्राराक्षस के नाटक तीखी सपाट संवाद रचना में मानवीय क्रूरता विकृत यौन प्रवृत्ति तथा वर्ग संघर्ष को उदघाटित करते हैं । उनके नाटकों में सामाजिक और राजनैतिक विसंगतियों पर जहाँ तीखा व्यंग्य होता है, वहीं चुभती हुई सच्चाई भी होती है, ऐसा ही उनका नाटक मरजीवा है । जिसमें राजनैतिक व सामाजिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार, ढोंग और बेईमानी को उजागर किया गया है । मरजीवा न अपनी मर्जी से जी सकता है, और न ही मर सकता है ।

नाटक का नायक "आदर्श" शिक्षित बेरोजगार युवक है, बेरोजगारी से तंग आकर वह और उसकी पत्नी भूमि आत्महत्या करना चाहते हैं आदर्श स्वयं अपनी पत्नी व पागल पिता को नींद की गोलियाँ दे देता है, दूसरे दिन उसका पिता मरा हुआ मिलता है । वह और भूमि बच जाते हैं, आदर्श दुबारा करंट आत्महत्या का प्रयास करता है । इसमें उसकी पत्नी भूमि मर जाती है । बिजली फेल हो जाने के कारण वह फिर बच जाता है । अपना अपराध स्वीकार कर वह जेल चला जाता है । जेल में पुलिस आफिसर उसके सामने ही एक नक्सलवादी की हत्या कर देता है । वह आदर्श को गवाह बनाना चाहता है, और जेल से छोड़ देने की शर्त रखता है परन्तु आदर्श के मना करने पर उसे पागल घोषित कर दिया जाता है और उसे जिन्दा जला दिया जाता है ।

10. "एक और द्रोणाचार्य" ---शंकर शेष---

इन्होंने लगभग दो दर्जन नाटक लिखे हैं, बिन बाती के दीप, मूर्तिकार, बंधनअपने, अपने, फंदी, सरोवर, खजुराहो, का शिल्पी, एक और द्रोणाचार्य, अरे:मायावी सरोवर, घरौंदा, रक्तबीज, चेहरे, पोस्टर, कोयल गांधार, बेटों वाला बाप, तिल का ताड़, आदि कई सफल नाटक हिन्दी रंगमंच को दे चुके हैं। इनके नाटक आधुनिक व्यक्ति की त्रासदी व वैचारिक द्वंद्व को सफलता पूर्वक उदघाटित करते हैं। इसलिए डा. शेष पुरस्कृत भी हो चुके हैं।

शंकर शेष कृत "एक और द्रोणाचार्य" नाटक आधुनिक युग मे शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीति, मूल्यहीनता, तथा अनैतिकता को चित्रित करता है। इस नाटक का कथानक मध्यम वर्गीय आकांक्षाओं अभिलाषाओं टूटते मूल्यों का केन्द्र बनकर चला है। नाटककार ने पौराणिक मिथक का उपयोग कर महाभारत कालीन गुरू द्रोणाचार्य के जीवन की घटनाओं में समकालीन शिक्षक व शिक्षा प्रणाली का सामंजस्य स्थापित किया है।

नाटक का नायक अरविन्द आदर्श वादी विचारधारा का पोषक है। किन्तु उसकी पत्नी लीला दुनियादारी के साथ-साथ अपनी इच्छाओं की पूर्ति अरविन्द द्वारा करना चाहती है। इसलिए अरविन्द न चाहते हुएभी प्रिंसिपल का पद ग्रहणकर अध्यक्ष की कठपुतली मात्र बनकर रह जाता है। उसकी आत्मा उसे रोकती है, किन्तु उसकी पत्नी तथा मित्र उसे ऐसा करने से मना करते हैं। इस कथनक साथ-साथ द्रोणाचार्य की कथा को भी अरविन्द के स्वप्न के माध्यम से दर्शाया गया है। स्वप्न में विमलेन्दु अरविन्द को द्रोणाचार्य के आर्थिक सकट से ग्रस्त परिवार के बारे में बताता है कि किस प्रकार अपनी पत्नी अपने पुत्र को दूध के स्थान पर आटा घोलकर पिलाती है। बाद मे दुर्योधन के यहां स्वाद क ज्ञात होने पर पुत्र अश्वत्थामा सोचता है, कि मुझे दूध के स्थान पर दूसरी वस्तु दे दी गया थी। पत्नी के कहने पर

विवश होकर द्रोणाचार्य पाण्डवों को ट्यूशन पढ़ाता है । अपने आदर्श को त्याग देता है । उसी प्रकार आज का शिक्षक मंत्री पुत्रों और गुण्डों को विवश होकर ट्यूशन पढ़ाता है । अपना आत्म सम्मान त्यागकर अपराधियों को दण्डित न करके उनका साथ देता है । उनके आगे पीछे घूमता है । देखते हुए भी नकल करने वाले विद्यार्थियों को अनदेखा कर देता है ।

यह सम्पूर्ण नाटक आज के समाज में फैली मूल्यहीनता दिशाहीनता भ्रष्टाचार, स्वार्थलिप्सा, पदलोलुपता, के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त आपाधापी राजनीति तथा भ्रष्टाचार का प्रतीक है ।

11. "देवयानी का कहना है"

--रमेशबक्षी--

रमेश बक्षी कृत नाटक देवयानी का कहना है, ये रूपतीय नाटक है, जिसमें स्त्री पुरूष के सम्बन्धों को नये दृष्टिकोण नये चिंतन तथा नवीनप्रयोगों के आधार पर परखा है। परम्परागत वैवाहिक जीवन पर प्रश्नचिन्ह लगता है नाटक में एक ऐसी जिंदगी को प्रस्तुत किया गया है जहाँ केवल स्वतन्त्रता हो, कोई बंधन न हो "मुझे एक आसमान ले दो खूब नीला साफ बहुत बड़ा। मैं दीन दुनिया से बेखबर उसमें उड़ना चाहती हूँ। देवयानी और साधन एक घटना की तरह मिलते हैं और बिना किसी अलगाव लगाव के एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। सम्पूर्ण नाटक में घटनाओं की गहराई चरित्रों का संघर्ष नहीं है, केवल तीखे बोलचाल वाले शब्दों का प्रयोग है।

नाटक का नायक साधन सामाजिक मूल्यों को मानने वाला गम्भीर चिंतनशील, आदर्शवादी युवक है। उसे जीवन में स्थिरता चाहिए। देवयानी को मालूम नहीं है सही दिशा कौन सी है वह एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे पुरूष के साथ खिलवाड़ करती रहती है।

यह नाटक आर्ष वाक्यों, निर्जीव सम्बन्धों परम्परागत सामाजिक विश्वासों और उपदेशात्मक लम्बी लम्बी बातों के विरूद्ध विद्रोह की चेतना का नाटक है। प्रस्तुत नाटक में देवयानी अहंवादी स्वच्छन्दताप्रिय नारी है। मुँहफट युवती है। साधन के खाना थूक देने पर मारपीट पर उतारू हो जाती है। साधन को पति के रूप में स्वीकार नहीं करती इसलिए कमरे में पर्दा लगाकर पार्टीशन करती है। और एक दोस्त के रूप में रहना चाहती है। उसे मातृत्व शारीरिक पवित्रता पारिवारिक मूल्य उसे ढकोसले और अंधविश्वास लगते हैं।

इस नाटक में नारीस्वतन्त्रता के नारे के साथ साथ पाश्चात्य से प्रभावित स्वच्छन्दतावाद के परिप्रेक्ष्य में धूमिल होते पारिवारिक सम्बन्धों - सामाजिक मूल्यों को चित्रित कियागयाहै तथा स्त्री पुरूष के सम्बन्धों को नये चिंतन धारणाओं तथा विस्तृत आयामों से संयुक्त किया गया है।

12· त्रिशंकु:- 1973 ब्रजमोहन शाह

लोक नाट्य परम्परागत शैली और आधुनिक नाटकीय टेकनिक के समन्वय का सुन्दर प्रयोग ब्रजमोहन शाह कृत "त्रिशंकु" में किया गया है। इस नाटक का शीर्षक मिथक है। बाकी सब कुछ आधुनिक परिवेश से जुड़ा हुआ है। त्रिशंकु पौराणिक प्रतीक नाटक के माध्यम से समकालीन युग की विसंगतियों में और राजनीति पर करारा व्यंग्य किया गया है। उच्च वर्गीय नेता अफसर सेठ, मध्यमवर्गीय युवती, सिपाही, बाबू, ज्योतिषी निर्माण के चपरासी मजदूर आदि सभी वर्ग के पात्र इस नाटक में अपनी मनःस्थिति तथा वस्तुस्थिति को उद्घाटित करते है। जिसके कारण नाटक में सम्पूर्ण समाज का चित्र प्रस्तुत हो जाता है। वर्गहीन प्राणी, बुद्धिजीवी युवक, थियेटर वाला आदि भी आधुनिक जीवन की समस्याओं को सम्प्रेषित करते हैं। इस नाटक में युवक मुख्य पात्र के रूप में चित्रित है। जिसके माध्यम से बेरोजगार युवा वर्ग की त्रासदी को यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया गया है। बेरोजगारी आज की मुख्य समस्या है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आजका युवक बेरोजगार दिशाहीन होकर भटक रहा है। इस भटकने का उसके पास कोई समुचित समाधान नहीं है। आधुनिक परिस्थितियों से त्रस्त होकर वह क्रान्ति लाना चाहता है। किन्तु उसका भी उसके पास कोई उपाय नही है। क्योंकि वह दुर्बल ठुकराया हुआ अनुभव हीन और अपने आप मे उलझा हुआ त्रिशंकु है।

प्रस्तुत नाटक में रंगला और रंगली सूत्रधार बनकर नाटक का प्रारम्भ अपने नृत्य और भाषणों से करते है। नाटक के प्रारम्भ होने पर जनता में कोलाहल होता है। वह कुछ नया देखना चाहती है पुराना नहीं चाहती। नाटककार जनता में से ही पात्र चुनता है। सबसे पहले नेता नाटक का मुख्य पात्र बनना चाहता है उसके बाद अफसर और अफसर के बाद पूँजीपति सेठ आता है और यह क्रम क्रमशः मध्यम वर्ग युवती, सिपाही, और ज्योतिषी तक चलता है। एक दूसरे को नीचा दिखाकर प्रत्येक पात्र अपनी प्रशंसा करता है लेकिन नाटककार इसमें से किसी

को भी केन्द्र पात्र नहीं बनाता । तभी उसकी दृष्टि डरे हुए घबराये हुए ऐसे युवक जो एम॰ए॰ है लेकिन वहबेरोजगार है वह उसे मुख्य पात्र बनाकर इसके माध्यम से भ्रष्ट नौकरशाही, अफसरी, नेताशाही, भाइ-भतीजावाद, आदि का चित्रण किया है ।बुद्धिजीवी वर्ग समकालीन विषम परिस्थितियों से परिचित है । पर कुछ नहीं पाता, वह "समथिंग इज रांग सम व्हैर" कहकर रह जाता है । इस प्रकार यह नाटक आधुनिक जीवन की विद्रूपताओं, अर्थ-हीनता, निरुद्देश्यता तथा बेरोजगार युवा वर्ग की मानसिक कुंठाओं को चित्रित करता है ।

समाज का शिक्षित डिग्रीधारी युवावर्ग नयापन चाहता है, क्रान्ति लाना चाहता है । उसमें जागृति है पर वह असफल रहजाता है । क्योंकि उच्च वर्ग के प्रतिनिधि नेता अफसर और सेठ उसके हर प्रयास को असफल बनादेते हैं । यही कारण है कि वह अपने को दुर्बल और असमर्थ समझने लगता है अपनी स्थिति से असन्तुष्ट है किन्तु बदलाव लाने में असमर्थ इसलिए वह त्रिशंकु बना हुआ है ।

13. इतिहास चक्र:-1978----दया प्रकाश सिन्हा---

दया प्रकाश सिन्हा के इतिहास का चक्र, सादर आपका, ओह अमेरिका, कथा एक कंस की आदि सुप्रसिद्ध नाटक हैं।

इतिहास का चक्र आधुनिक युग के शासक वर्ग, पूँजीपति वर्ग तथा नौकर शाही वर्ग पर तीखा प्रहार करता है। स्वतन्त्र भारतका सत्ताधारी व पूँजीपति वर्ग भ्रष्ट होकर नौकर शाही वर्गके सामने एक विषाक्त वातावरण की रचना कर रहा है। जिसमें निम्न निरीह वर्ग पीसा जा रहा है। जिसमें चुनाव के बाद शासक वर्ग निम्नवर्गकी जनता को अपने हाथ की कठपुतली समझता है। शासक उसे रोजी, रोटी और कपड़े का लालच देकर उसके "वोट" खरीद लेता है।

प्रस्तुत नाटक में राजा व कुबेर के माध्यम से शासक वर्ग व पूँजीपति वर्गका चित्रित किया गया है। मोहिनी उसको भ्रष्ट करने वाली नारी के रूप में है और नाम रहित अनामी साधारण जनता के रूप में है। जो बीमार बेहाल और फटेहाल वह साधारण जनता के प्रतीक के रूप में चित्रित हुआ है। नाटक के पात्र राजा और कुबेर भ्रष्ट शासक के प्रतीक है। बाबू भ्रष्ट नौकरशाही-वर्ग का प्रतीक है इस प्रकार नाटक में आधुनिक युग की राजनैतिक व आर्थिक विसंगतियों प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है।

14. "ओहअमेरिका"---दयाप्रकाश सिन्हा----

इस नाटक में मुस्लिम शासनकाल अंग्रेजोंशासनकाल और स्वतन्त्रभारत इन तीन काल खण्डों के माध्यम से तीन पीढ़ियों श्याम के पिता, श्याम लालतथा उसकी सन्तान के चिंतन को कार्यकलापों के अन्तर को स्पष्ट किया है । युवाअवस्था में पाश्चात्य मोहर से ग्रसित श्याम लाल अपने पिता को बुढ़ा ढोंगा और बैकवर्ड कहने वाला बृद्धावस्था में अपनी सन्तान के आचरण को देख कर सिर पकड़ लेता है उसकी सन्तान भी उसकी अवहेलना करती है । तब उसे अपनी भारतीय संस्कृति और सभ्यता का महत्व ज्ञात होता है । नाटकमें श्याम लाल माधुरी, समीर, रमेश, जया आदि पात्र भौतिक चेतना से प्रभावित हैं । विवेक पात्र विवेक का प्रतीक है । वोह अमेरिका पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है । इस नाटक में हिप्पी सभ्यता आधुनिक युवापीढ़ी कीआन्तरिक विद्रूपताओं को उजागर करता है ।

15. तेंदुआ
========== 1974 मुद्राराक्षस

मुद्राराक्षस का तेंदुआ नाटक न तो चरित्र प्रधान नाटक है, और न घटना का प्रधान है। प्रस्तुत नाटक में अभिजात्य कहलाने वाले वर्ग की कुंठित मनोवृत्ति यौन स्वच्छंदता, विकृत काम सम्बन्धों को चित्रित किया गया है। मिसेज रेनूराय को एक ऐसे जानवर की तलाश है, जो मिसेज मदान के तेंदुये से लड़ सके। तभी उसे एक बेकसूर माली मिल जाता जिसे उसका पति हवालात में बन्द करने ले जाने वाला है किन्तु मिसेज रेनूराय उसे अपने मनोरंजन के लिए ले लेती है। और गर्वित होकर मिसेज मदान के समक्ष तरह तरह से तड़पाती है। उन दोनों कोमालों की पीड़ायें, सेक्स को उत्तेजना दृष्टिगोचर होती है। अपनी कामोत्तेजना की अवस्था में माली की रान पर मोम पिघलाती इलैक्ट्रिक शाक लगाती और अन्त में आलंपिक मशाल बनाकर उसे मार डालती है। तेंदुआ यहाँ पर धन सम्पन्न लोगों की यौनसम्बन्धी कुंठा, हिंसक भावना विकृत मनोवृत्तियों का प्रतीक है।

16. बकरी- 1974 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना कृत "बकरी" नाटक समकालीनसंकट ग्रस्त जिन्दगी का यथार्थ रूप से चित्रण करता है। पारसी रंग शैली तथा भारतीय लोक नाट्य की नौटंकी शैली के सम्मिलित रूप पर आधारित नाटक आमआदमी की त्रासदी का प्रमाणिक दस्तावेज है। परतंत्रता की जंजीरों से निकलकर जनताअपने ही नेताओं द्वारा नइ जंजीरों से जकड़ कर छला जा रही है। समस्त नाटक में इसी तथ्य को प्रतीकात्मक तथा व्यंग्यात्मक ढंग से प्रतिपादित किया गया है।

प्रस्तुत नाटक में चरित्रों, कथनक तथा घटनाओं की असम्बद्धता है। फिर भी कथा को तीन डाकू, एक सिपाही, विवश औरत, युवक आदि पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन के सारे उतार चढ़ाव भ्रष्टाचार तथा साधारण जनता की बिडम्बना को चित्रित कियागया है। नाटक का प्रारम्भ नर नारी के संवादों द्वारा होता है। नर पांच रत्नों की ढोंग की रेस से आधुनिक भ्रष्ट राजनीति का संकेत मंगलाचरण में ही कर देता है। मशक से सड़क सींचते भिश्ती को देखकर दुर्जन सिंह, कर्मवीर तथा सत्यवीर जनता को लूटने की योजनायें बनाते है। ये तीनों डाकूदेश की व्यवस्थाओं के प्रतीक हैं। उन तीनों में सिपाही भी सम्मिलित हो जाता है। ये सभी मिलकर गरीब भोली भाली बिपती कीबकरी को हड़प लेते हैं। और जब बिपती अपनी बकरी मांगने आती है, तो उसे सार्वजनिक सम्पत्ति लूट के आरोप में जेल भिजवाकर अपना मार्ग बाधा रहित कर लेते हैं। और जनता के अंध विश्वासों का लाभ उठाकर बकरी कोजनता द्वारा पुजवाते हैं। तथा जनता कल्याण के नाम पर बकरा शान्ति प्रतिष्ठान" बकरी संस्थान" बकरी सेवा संघ" "हरिजन सेवा संघ" स्थापित कर जनता को लूटते है। दुर्जन कर्मवीर सिंह को चुनाव में खड़ा कर मन्त्री बनवा देते हैं। जन चेतना के प्रतीक युवक को षडयन्त्र कर जेल भिजवा

देते हैं। डाकुओं को आगे चलकर नेता बन जाना आज के लुटेरे स्वार्थी, नेताओं के चरित्र को उजागर करता है। जो जनता के प्रतिनिधि बनने का दावा कर उसी को लूटते हैं। इस नाटक में बिपति आम जनता का प्रतीक है। जो लाचार विवश तथा ग्रामीण अंध बिश्वासों से भरी है। और युवक जन चेतना युक्त युवा पीढ़ी का प्रतीक है। युवक का आक्रोश - नेताओं का ब्यभिचार देखकर फूट पड़ता है। यही कि वोट चुनाव सब मजाक हो गया है। सब ठूँठ पर चल रहा है। गरीबों की बकरी पकड़कर पहले उनसे पैसा दुहा अब वोट दुह रहे हैं। फिर पद और कुर्सी दुहेंगे।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक सत्ता की स्थिति पर करारा ब्यंग्य किया गया है।

17. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक:-

सुरेन्द्र वर्मा ने कुल तीन नाटक लिखे हैं, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य का पहला किरण तक, द्रौपदी आठवां सर्ग आदि नाटक और कई एकांकियों के द्वारा सुरेन्द्र वर्मा हिन्दी नाटक क्षेत्र में बहुचर्चित हो चुके हैं।

स्त्री-पुरुष के काम सम्बन्धों को आधार बनाकर नाटक लिखने वालों में सुरेन्द्र वर्मा कृत सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटक में फ्रायड वादी यौनवृत्ति को केन्द्रबिन्दु बनाकर रचा गया है। यह नाटक पति-पत्नी के अत्यन्त सूक्ष्म एवं अन्तरंग काम सम्बन्धों का ही चित्रण तो करता ही है, साथ ही आदि काल से अनैतिक व वर्जित माने हुए तथ्य को भी साहस व सूक्ष्मता से प्रकट करता है। जागरूक और समर्थ नारी तथा पुरुष अहं की टकराहट ने आज के नैतिक व सामाजिक मूल्यों को झकझोर दिया है। नारी की सार्थकता के प्रति सम्मान संतान प्राप्ति व पति सेवा आज गौण उत्पादन मात्र रह गये हैं। शारीरिक सुख में ही एक मात्र नारी पुरुष की सार्थकता है।

पौराणिक तथ्य नियोग प्रथा को कथावस्तु बनाकर नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। पति की नपुंसकता तथा पत्नी का उत्तेजना के क्षण से गुजरना और रीते हाथों वापस लौट आना, ऋतुओं का बिना प्रभाव के गुजरते जाना। परन्तु अकस्मात विस्फोटक की स्थिति पैदा होने पर मर्यादा सन्तान प्राप्ति, सन्तोष, शारीरिक पवित्रता जैसे मूल्यों को नकारना आदि तथ्य के आधार पर शाश्वत यौन सम्बन्धों व स्थितियों का चित्रण इस नाटक में किया गया है।

प्रस्तुत नाटक में जातक कथा के पात्रों और पौराणिक प्रसंग को आधुनिक जीवन सत्य से जोड़ा है। राजा ओक्काक और रानी शीलवती

लगभग शान्त जीवन जी रहे थे । किन्तु राज्य को उत्तराधिकारी की चाह थी, जो इच्छा ओक्काक नपुंसक होने के कारण पूरी नहीं कर सकता था, अमात्य परिषद द्वारा सूर्य अस्पर्शा शीलवती को एक रात के लिए धर्म नारी बनाकर उपपति का चुनाव करने के लिए विवश किया जाता है । सूर्य की अन्तिम किरण में अर्थात विश्वास, सामाजिक मूल्यों के समय में चुनाव से पूर्व वह अपने आप को वेश्या समझती है । उपपति के चुनावमें वह अपने बाल सखा प्रतोष को चुनती है । मध्य रात्रि में मूल्यों व विश्वास के जाल को तोड़ने का प्रयत्न करती है । किन्तु सूर्य की पहली किरण में वह धर्म, पवित्रता, मर्यादा को नये दृष्टिकोण से पहचानकर उन्हें पुस्तकीय घोषित कर देती है । ओक्काक पुरुषोचित ढंग से त्रस्त है । तो शीलवती शारीरिक इच्छा, सुख व कामना से विवश । कितनी युवतियाँ है, जो व्याह से पहले ही कुमारी नहीं रहती, और मैं ब्याहता होकर भी ब्रम्हचारिणी थी, लेकिन कब तक?....... मैं एक मामूली स्त्री हूं। जब शरीर के माध्यम से जीती हूं तो शरीर की मांगों को कैसे नकार सकती हूं ?)

(प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने स्त्री-पुरुष के काम सम्बन्धों, वैवाहिक मर्यादा, मूल्यों तथा वर्जनाओं को नई मनस्थितियों एवं नयेदृष्टिकाणों से परखा है । "सही शब्दों में निश्चय ही यह हिन्दी मेंअकेला नाटक है जो वर्जनाओं, पुराने मूल्यों, सामाजिक निषेधों और पति-पत्नी के रिश्ते को लेकर बनी हुई अत्यन्त नैतिक पवित्र तस्वीर को तोड़ता है । बिना किसी कुंठा या अपराध बोध के ।)

(इस प्रकार इस नाटक में धर्म से सम्पृक्त काम को आधुनिक भाव बोध की भूमि से जोड़ा गया है । आज के भौतिक वादी अंधी दौड़ में पुरुष अर्थ प्राप्ति के लिए दिन रात दौड़ रहा है धन प्राप्ति के समक्ष वह पत्नीऔर सन्तान को गौड़ मान रहा है । दूसरे शब्दों में वह नपुंसकनहोते हुए भी नपुंसक है । संज्ञाहीन है । इसलिए पत्नी पर पुरुष की ओर आकर्षित हो पूर्ण पुरुष की तलाश में भटक रहा है ।)

18. कथा एक कंस की =- "दया प्रकाश सिन्हा"

(इस नाटक में कंस को आधुनिक राजनीति में संलग्न नेता के रूप में माना गया है। नाटक कार ने महाभारत कालीन राजनीतिके दांव पेचों का तथा समकालीन राजनीति की समानता को ध्यान में रखते हुए राजनीति की क्रूरताओं, निरंकुशता, तथा अत्याचार से व्याप्त शासन की व्यवस्था को उजागर किया है तथा बंशी के स्वर को जनता के विद्रोह का स्वर माना है। अर्थात बंशी का स्वर जन साधारण की चेतना का प्रतीक है। जिसे कंस रूपी निरंकुश शासक आक्रान्त होता है, लड़खड़ाता है और अन्त में जन समूह की क्रान्ति से परास्त होता है।)

नाटक की कथा का प्रारम्भ कंस की प्रचंड अभिमान से विक्षिप्त मानसिक कुंठाओं की अभिव्यक्ति के साथ होता है। कंस कोमल हृदय वाला भावुक होता है। बाल्यावस्था में वह संगीत सीखता है। पिता उग्रसेन उसकी संगीत भावना का उपहास उड़ाता है। बाल्यावस्था की कोमल - भावनायें बर्बर क्रूरता में बदल जाती हैं। इसके अतिरिक्त शिकार खेलते समय पिता उग्रसेन द्वारा उसे जंगल में अकेला छोड़ दिया जाता है। डरकर रोने से उसकी इतनी पिटाई होती है कि उसके कपड़े गीले हो जाते हैं।

<परिणामस्वरूप पिताके प्रति कंस का आदरभाव कमहोजाता है। और वह पितृविरोधी बनकर उसे जेल में बंदी बनाकर स्वयं राज सिंहासन पर आरूढ़ हो जाता है। तत्पश्चात कंस इतना क्रूर हो जाताहै कि बहन के साथ उसका स्नेहभाव खत्म हो जाताहै। प्रत्येक रिश्ते को वह राजनीति से तौलता है। स्वाति कंस की प्रेमिका है, लेकिन कंस उसे अपने सेनापति प्रद्योत से विवाह करने को कहताहै तथा पूतना बनकर कृष्ण को मारने का आदेश देता है। पत्नी का राजसी दर्प उसे औरभी अहंकारी बना देता है। प्रजा कंस की क्रूरता को सहन नहीं कर पाती। युवा पीढ़ी विद्रोह करती है।)

इस पूरे नाटक की कथावस्तु युवावर्ग की चेतना का प्रतीक है। और अन्त में कंस इस वर्ग से पराजित हो जाता है। यह प्रतीक है, तानाशाही निरकुंशता की समाप्ति पर प्रजातन्त्र का आह्वान।

कंस का बाल्यावस्था की कलाप्रियता से नाटककार स्पष्ट करना चाहता है, कि व्यक्ति राजनीति में आने से पहले बालक के समान सरल हृदय वाला होता है। उसका हृदय देशप्रेम, देशसेवा, त्याग से युक्त होता है। किन्तु बाद में राजनीति के कुचक्रों में फंसकर वह क्रूर, स्वार्थी, अन्तर्विरोधी लोभी बन जाता है। और युवापीढ़ी इस अव्यवस्था को तोड़ने का साहस करती है। यही साठोत्तर कालीन युवापीढ़ी की चेतना है।

टगर:-1972 "विष्णु प्रभाकर"

"टगर" जिसका पूर्व नाम रश्मि था, अपने साहित्यिक पति शेखर द्वारा इसलिए छोड़ दी जाती है, कि वह उसके साथ सार्त्रे कामू आदि दर्शन साहित्य पर बहस नहीं कर पातीथी, पति द्वारा ठुकराये जाने पर वह प्रतिहिंसा पर उतारू हो जाती थी, और निश्चय करती है, कि मुझे एक बार पुरुषों ने छोड़ा है, तो मैं बार-बार पुरुषों को छोडूगी। इस प्रकार वह अपने रूप जाल मे ठाकुर, माथुर व नाजिम को फंसाती है। ठाकुर लोक गीतों की संग्रह के बहाने तस्करी करता है। टगर उससे प्यार का नाटक करती है और अन्त में उसके व्यवसाय को स्पष्ट करके उसे गिरफ्तार करवा देती है। फिर माथुर उसकी ओर आकर्षित होता है। वह अपनी पत्नी को तलाक देकर अपनी प्रेमिका कुसुम को धोखा देता है। जिससे कुसुम आत्महत्या कर लेती है। टगर उससे भी प्यार का नाटक रचती है। और अन्त में उसे भी बेईमानी के इल्जाम में गिरफ्तार करवा देती है। और नाजिम के पास चली जाती है। और जब नाजिम से विवाह की तैयारी हो जाती है, तब उससे विवाह के लिए मना करके छोड़कर चली जाती है।

प्रस्तुत नाटक में "टगर" समूची नारी जाति का प्रतीक है। आधुनिक नारी स्वअस्तित्व व स्वाभिमान की भावना से युक्त है। वह पुरुष द्वारा तिरस्कृत होने पर उससे बदला लेने के लिए उतारू हो जाती है। उसने आदर्श महिला के दम घोंटू नकाब को उतार फेंका है। आज वह समाज की चिंता न करते हुए अपने स्वतन्त्र जीवन व चिंतन में विश्वास करनेलगी है। इसी आधार पर वह नैतिक व सामाजिक मूल्यों को नकार भी रहा है।

20• राम की लड़ाई:-1974 डा• लाल

नाटक की कथा "धनुष यज्ञ" प्रसंग पर आधारित है। "धनुष" हमारे देश का प्रतीक है, जो साहसी पर प्रत्यंचा चढ़ा देगा। वही जानकी अर्थात सत्ता का वरण करेगा। क्योंकि हमारा यह धनुष पहले भी एक दो बार भंग हो चुका है। कभी अंग्रेजों ने भंग किया तो कभी जमींदारों ने, और अब आज नेता इसे भंग कर रहे हैं।

आज नहीं तो कल:- सुशील कुमार सिंह प्रस्तुत नाटक में देश की राजनीतिक बदलती परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। राजनीति में आहता एक दिखावा खोखला है यहाँ भाई भतीजावाद, जातिवाद, भाषावाद के नाम पर वोट बटोरे जा रहे हैं। इस नाटक में कुर्सी से चिपके अशक्त भ्रष्ट नेताओं का खुला वर्णन हुआ है। नाटक के पात्र युवक युवती विद्रोही नई पीढ़ी के प्रतीक हैं। वे देश के बूढ़े कर्णधारों के विपरीत आवाज उठाते हैं। इसके विपरीत पुरुष व युवती निरीह जनता के प्रतीक है। नाटककार ने सभी को नेताओं का प्रतीक माना है।

तीसरा हाथी :- रमेश बक्षी 1979"

(तीसरा हाथी में युवापीढ़ी की व्यक्तिगत स्वच्छंदता, स्वतन्त्रा इच्छाओं के परिप्रेक्ष्य में टूटती परम्पराओं, मान्यताओं एवं नैतिकताओं को चित्रित किया है ।)

(नाटक में दो पीढ़ी के संघर्ष को प्रदर्शित किया है । पूरे नाटक में पिता किसी भी दृश्य में उपस्थित नहीं होता, फिर भी उसकी अनुपस्थिति ही उपस्थिति का ज्ञान कराती है । कमरे का प्रत्येक वस्तु, बच्चे यहां तक कि रोगी पिता के कमरे से बजने वाली बजर तक सहमी हुई प्रतीत होता है । बचपन में पिता के कठोर अनुशासन में पले हुए बच्चे युवा होने पर मन का आक्रोश निकालते हैं । (रोगी बापकी सेवा में लगी बड़ी बेटी शुभा घुट घुट कर जी रही है । उसे हिस्टीरियाके दौरेआते हैं । मझला लड़का रोशन पिता की तानाशाही के कारण आत्महत्या कर लेता है । बड़ा लड़का मोहन बचपन में पिता से बेहद मार खाकर नपुंसक हो चुका है । इस प्रकार सारा घर ही एक प्रकार से दमघोटू वातावरण से युक्त है । जिसमें सभी छुटकारा पाने को छटपटा रहे हैं । /तीसरा हाथी पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं का प्रतीक है । विभा, सोहन तथा अमित इससेप्रभावित पात्र हैं । वे पुरानी मान्यताओं के प्रतीक हाथी को गिराने का प्रयत्न करते हैं । बड़ी लड़का शुभा परम्परावादी है । उसे डर है कि हाथी केगिरने के सदमों को पिता जी सहन नहीं कर पायेंगे । इसलिए वह "हाथी" न गिराने पर बल देती है । पिता की लम्बी बीमारी और अपने अविवाहित रहने पर वह कुंठित है । फिर भी पिता की सेवा करती है । वह आदर्श चेतना से प्रभावित है । विभा और सोहन भाई बहन होते हुए भी असमर्पित हैं । वे दोनों यथार्थवादी भौतिक चेतना से प्रभावित हैं । मोहन लिजलिजा पात्र हैं ।)

22. कुत्ते ﴾1979﴿

डा॰ सुरेश चन्द्र शुक्ल

प्रस्तुत नाटक में दो लड़कियाँ आभा व राकाके माध्यम से कामकाजी महिलाओं के आन्तरिक बाह्य संघर्ष का चित्रण किया गया है। राका पिता के मरणोपरान्त मजबूरी में नौकरी करती है। वह आदर्शवादी है, इसलिए गलत सहन नहीं कर पाता, इसी कारण वह असन्तुष्ट, बैचेन व टूटी हुई है। दूसरी पात्र आभा है। जो व्यावहारिक चेतना से प्रभावित है। वह पुरुषों को बातों-बातों में ही उलझाये हुए अपना काम निकालना चाहती है। और वह राका कोभी इसी व्यावहारिकता का सलाह देती है। आज सीधे का जमाना नहीं है।

कुत्ते प्रतीक के माध्यम से आज कुत्सित मनोवृत्ति भ्रष्टाचारी, कुदृष्टिवाले पुरुषों के आचरण को उद्घाटित किया है।

23· तू-तू:- (1979)

आस्तानंद सदासिंह

(प्रस्तुत नाटक में "चाचा" नेता वर्ग का प्रतीक जनता का भाग्य विधाता बना हुआ है। वह अपने चमचों द्वारा अपने जल-सेकरवाता है। किराये पर लोग बुलाकर अपने को फूलमाला पहनवाता है। दंगे फसाद करवाता है। और अपनी मूर्ति बनवाता है।)

(चाचा अपने प्रसंशक कुत्तों को मार डालता है, क्योंकि उसे डर है कि वे उसकी असलियत खोल देंगें। आज का नेता भी अपने मार्ग में बाधक को हमेशा के लिए हटा देता है। पर उनका भी कभी अंत होता है, जैसे बुलडोग अन्त में चाचा को मार देता है। अर्थात जनता विरोधी बन जाती है तो वह अन्याय को खत्म कर देती है। इस प्रकार यह समस्त नाटक आज के युग की भ्रष्ट विकाक्त राजनीति भाई, भतीजावाद, चमचावाद, सत्तावाद, स्वार्थलिप्सा आदि का नग्न चित्रण किया गया है।

Hansa Mehta Library
M. S. University of Baroda

24. एक चीख अंधेरे की:-

गोपाल उपाध्याय

"एक चीख अंधेरे की" एक ग्रामीण अंचल की कुरीतियों, विसंगतियों पर कुठाराघात करने वाला नाटक है। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने फौजी की पत्नी की समस्याओं गांव वालों का उसके प्रति दुर्व्यवहार तथा उसके प्रति कर्तव्य बोध का चित्रण किया है।

नाटक की कथा हवलदार नरहरिसिंह की पत्नी मोतिया को लेकर लिखी गया है। नरहरिसिंह फौज में चला जाता है। उसकी असहाय, अनपढ़, जवान पत्नी मोतिया गांव के भेड़िया प्रवृत्ति वाले पंडित जी, ठाकुर आदि व्यक्तियों के बीच में अकेला रहती है। गांव के लोग उसे बुरी नजरों से देखते हैं। और अपनी इच्छा पूर्ति न होने पर उल्टा मोतिया पर ही दोष लगाकर उसे कलंकी दुश्चरित्रा बताते हुए हैं। गांव के प्रधान का लड़का गोबिन्द पढ़ा लिखा समझदार युवक है। एकमात्र वही मोतिया की मजबूरी तथा फौजी की पत्नी के प्रति कर्तव्य को अनुभव करता है परन्तु लोभी गांव वाले उस पर भी लांछन लगाते हैं। अब मोतिया अकेली निस्सहाय खूंखार भेड़ियों के बीच रह जाती है। कि अचानक उस पर वज्राघात होता है, सरकार की तरफ से उसके पति की लड़ाई में मारे जाने की सूचना आती है, वह दुःख से टूटी अंधेरे में डूब जाती है।

26. संभवामि युगे-युगे:-
1980

----वि. जे. हरिजीत

प्रस्तुत नाटक संभवामि युगे-युगे में महाभारत कालीन प्रसंग कोलेकर समसामयिक राजनीति का चित्र प्रस्तुत कियागया है। दुर्योधन, दु:शासन धृतराष्ट्र जैसे राजनेता आजभी विद्यमान हैं। जो सत्ता प्राप्ति हेतु उन्हीं के समान अनेक षडयन्त्रों, हथकण्डों आदि का सहारा ले रहे हैं। और शकुनि जैसे भ्रष्ट सलाहकार भी हैं। जो झूठे आश्वासनों से जनता कोभी बहलाये हुए हैं। इनके जाल में फंसी निरीहभोली भाली जनता मंहगाई, तानाशाही, भ्रष्टाचार रूपी सर्पों से लड़ रही है। यदि कोई आस्था बुद्धिजीवी आवाज उठाता है, तो उसकी आवाज मौनहोकर रह जाती है।

प्रस्तुत नाटक में शकुनि अवसरवादी नेता के रूप में चित्रित है। जो धृतराष्ट्र को उलझाये रखता है। उसे पाण्डवों के विरुद्ध भड़काता है। वह धृतराष्ट्र को पाण्डवों से युद्ध करने की सलाह देता है तो दूसरी ओर जनता को लुभावने भाषण से रिझाता है। वैसे इसी तरह आज भी जनता इन दोहरे नेताओं से त्रस्त है। सत्ता की होड़ में होने वाला चुनाव का नाटक और उसके बाद की विषम परिस्थिति आर्थिक संकट आदि ने जनता को गहरे अंधकार में ढकेल दिया है।

नाटक के अन्त मेंजनता की शक्ति इसकेसमर्थन काप्रतीक भीम धृतराष्ट्र रूपी अंधी सत्ता को नष्ट कर देता है।

27. उत्तर-उर्वशी- 1980

---हमीदुल्ला

"उत्तर-उर्वशी" नाटक में आधुनिक मानव की विसंगतियों मनः स्थितियों कुंठाओं का चित्रण पुरुष एक, दो, तीन, व स्त्री पात्रों के माध्यम से किया गया है। इसमें पुरुरवा तथा उर्वशी नाम के प्राचीन पात्रों को आधुनिक धरातल पर उतारा है। प्राचीन काल में उर्वशी का तो एक प्रेमी पुरुरवा था जबकि आज तो प्रत्येक व्यक्ति पुरुरवा बना उर्वशी की तलाश में घूम रहा है। दिशाहीन, आदर्शहीन और मूल्य हीन जीने की प्रक्रिया से गुजर रहा है। नाटककार ने इस नाटक में सीधी सपाट किन्तु चुभती शैली का प्रयोग कर समकालीन व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप का चित्रण किया है।

प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने धर्मयुग, अर्थयुग और काम युग के व्यक्तियों की विसंगतियों मनःस्थितियों व कार्यकलापों का वर्णन किया है। अर्थयुग की नारी के रूप में मोना को चित्रित किया गया है। जो प्रकाशक की पत्नी होते हुए भी लेखक को वासनात्मक दृष्टि से देखती है। इस प्रकार इसयुग में नारी पुरुष के बढ़ते अनैतिक सम्बन्धों, स्वच्छन्द यौन वृत्तियों ने पारिवारिक जीवन को विघटनशील बना दिया है। आज मनुष्य का जीवन यंत्रवत, एकाकी, दिशाहीन हो गया है। काम युग के अन्तर्गत नाटक कार ने पाखण्डी महात्मा व उसकी शिष्याओं के कार्य कलापों को दर्शाया है। एक पुरुष को वह शिष्य बना लेता है, उसकी पत्नी सन्तान की इच्छा के लिए उस महात्मा के पास जाती है, और महात्मा उसे नशे की गोलियाँ प्रसाद रूप में खिलाकर व्यभिचार करता है।

28. ठहरा हुआ पानी :- 1980 ---शान्ति मेहरोत्रा

प्रस्तुत नाटक का प्रारम्भ परम्परागत मान्यताओं की स्वीकृतोक्ति से होता है । रमा एवं सीता, मंगला माता को चिट्ठी लिखते हुए दोहराती जाती हैं । जो इस कड़ी को तोड़ेगा उसका सर्वनाश निश्चित है । परम्परागत मर्यादा का और ठहरा हुआ पानी सड़ी गली परम्परा का प्रतीक है । सम्पूर्ण परिवार इसी परम्परागत अंध विश्वासों के तहत सड़ रहा है । पिता के कठोर अनुशासन में सन्तान कुंठित व दब्बू बन गये हैं। इस प्रकार पिता के अनुशासन के बोझ तले दबे किशोर व युवा बच्चे विद्रोह की चिनगारी से सुलगने लगते हैं । बड़ी लड़की सीता 35 वर्ष तक अविवाहित रहकर निरर्थक जीवन बिता रही है । इसके विपरीत रमा नित्य नये प्रेमी के साथ घूम फिर रहा है । और हंसकर जीवन बिता रही है । वह नित्य नये प्रेमी बनाकर भरपूर जीवन जीना चाहती है । अचानक सीता स्वतंत्र रहने का निर्णय करती है । जिससे माता पिता हतप्रभ रह जाते हैं । रमा घर से निकलकर एक ऐसे प्रेमी की तलाश करती है, जिसकी पत्नी को कैंसर है वह इस आशा में है कि पत्नी के मरने के बाद उसका प्रेमी उससे विवाह कर लेगा ।

29. सादर आपका:-

1980

——दया प्रकाश सिन्हा

"सादर आपका" की लज्जावती मित्रों व अफसरों को खुश करके पति को नौकरी दिलवाती है। प्रमोशन पाती है। तथा अपने से कम आयु के युवकों की ओर आकृष्ट होती है। वह एक अतृप्त, असन्तुष्ट तथा अकेलेपन से पीड़ित नारी है। भौतिक चेतना से प्रभावित, लज्जा, स्टेटस, कार मकान आदि के सामने शारीरिक पवित्रता शील तथा मर्यादा को तुच्छ समझती है।

परन्तु रेखा घर के दूषित वातावरण से बाहर आना चाहती है। वह अपने प्रेमी रोहित की दया या सहानुभूति नहीं, अपितु प्रेम के अधिकार पर विवाह करना चाहती है।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में आधुनिक जीवन की खोखले पन, कृत्रिमता अजनबीपन तथा महानगरीय जीवन के मृतप्राय परिवेश का चित्र किया गया है। वास्तव में यह नाटक वैयक्तिक स्तर पर बनते बिगड़ते स्त्री पुरुष के सम्बन्धों महत्वाकांक्षी पत्नी के कारण टूटते पारिवारिक जीवन तथा अकेले पन से स्वच्छंद यौन चेतना की ओर उन्मुख होती नारी के मानसिक द्वंद्व को अभिव्यक्त करता है।

30. पहला राजा:-

1980

---जगदीश चन्द्र माथुर

"पहला राजा" प्रतीकात्मक सन्दर्भों में आधुनिक परिस्थितियों, सुविधा भोगी वर्ग की मन: स्थितियों का चित्रण करता है । नाटककार ने राजनीति क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार हथकंडों षडयन्त्रों आदि को पौराणिक पात्रों के माध्यम से उदघाटित किया है।

नाटक की कथा उस काल से सम्बन्धित है, जब आर्यों को अपनी स्थापना केलिए दस्युओं से संघर्ष करना पड़ रहा था । और उनके पास अपना कोई नेता नहीथा । तब ऋषियों ने पृथु को अपना पहला राजा घोषित किया इस पौराणिक आख्यान में समकालीन राजनीतिक झलक स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती है ।

नाटक का प्रारम्भ सुनिया और दासी के वार्तालाप से प्रारम्भ होता है । पौराणिक प्रसंगोंके माध्यम से नाटककार ने आधुनिक जीवन की विरूपता कोभी संकेतित किया है । दुराचारी वेना काशासनअंग्रेजी शासन का प्रतीक है। सुनीथा द्वारा उसेसुरक्षित रखनेका प्रयासआज भी अंग्रेजी सभ्यता की मानसिक गुलामी को जीवित रखने का प्रयासहै। इसी प्रकार पृथु व कवष उच्च वर्ग व निम्न वर्गके प्रतीक हैं ।

सन्दर्भ सूची
==========

प्रथम परिच्छेद
=============

1. डा॰ श्रीपति शर्मा हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव पृष्ठ 222
2. मुद्राराक्षस: योर्सफेथफुली पृष्ठ 22 (भूमिका)
3. डा॰सावित्री स्वरूप: नव्य हिन्दी नाटक पृष्ठ 265
4. डा॰ मोहन अवस्थी: हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास पृष्ठ 113
5. रमेश गौतम: सातवें दशक के प्रतीक नाटक पृष्ठ 21
6. डा॰ दशरथ ओझा, हिन्दी नाटक उद्भव और विकास पृष्ठ 127
7. रमेश गौतम: सातवे दशक के प्रतीक नाटक पृष्ठ 23
8. मुद्राराक्षस , योर्सफेथफुली (भूमिका) पृष्ठ 22
9. ऋगुवेद दधाते ये अमृते सुप्रतीके 1/185/6
10. हिन्दी विश्वकोश पृष्ठ 448
11. मानकहिन्दी कोश खण्ड –4 पृष्ठ 614
12. अमरकोश पृष्ठ 23/87
13. दूसरा सप्तक : स॰ अज्ञेय : वक्तव्य पृष्ठ11
14. मम्मट : काव्य प्रकाश, द्वितीय उल्लास पृष्ठ सं॰ 9
15. द्रष्टव्य शोभाकर मिश्र, अलंकार रत्नाकर उद्धृत राममूर्ति त्रिपाठी लक्षणा और उसका हिन्दी काव्य में प्रसार, वाराणसी स॰ 2033,पृष्ठ444
16. मम्मट: काव्य प्रकाश द्वितीय उल्लास पृष्ठ सं॰ 9
17. डा॰ नगेन्द्र,नयी समीक्षा नये सन्दर्भ पृष्ठ संख्या 26, 1970 दिल्ली ।
18. डा॰ शान्तिस्वरूप गुप्त: साहित्यिक निबन्ध (प्रतीक विधान)पृष्ठ161
19. डा॰ राम चन्द्र वर्मा, शब्दार्थ दर्शन पृष्ठ 422
20. आचार्य: राम चन्द्र शुक्ल चिन्तामणि द्वितीय भाग पृष्ठ12
21. डा॰ लक्ष्मी नारायण लाल, मादा कैक्टस भूमिका
22. गिरीशरस्तोगी समकालीन हिन्दी नाटक कार पृष्ठ 66–67

21, टगर, विष्णुप्रभाकर पृष्ठ72